

65/1/11
P.M.

30.05.1958
3/1/58

बलचनमा (21)

(मैथिली)

NOT FOR ISSUE

मूल लेखक

ना गार्जुन

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता

प्रकाशक :

मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

पंजीकृत कार्यालय :

१०, बालमुकुन्द मन्दिर रोड,

कलकत्ता-७

विद्यापति-स्मृति-समारोह १९६२-६३

भाग : ४) टीका



प्रथम संस्करण : १९००

प्र. करवरी, १९६७

May-256

घटना संख्या : १९३७ ई. के शुरुआत

सूत्रक :

कुमार प्रियदर्शन

पुत्री, मुक्ताराम दात्र स्ट्रीट,

कलकत्ता-७

१

जखनी हम चौदह बरखक रही तखनिये हमर बाप मरि गेल। परिवार
मे माइ, दाइ आ छोटीकी बहिन छल। एकटा छोट-छीन घर छल।
बरत अगुथति में नान्हटा आंगन छले, बामा कात आठ-दस धूर बारी छल।
बोहि बारी मे भरि साल किछु ने किछु उपजा होइते रहै। बारीक पाछू
मे गिरहयक इनार छलनि, आ इनारक सीका मे छेल। दहिना कात
कनिके हटि कऽ हुनके लोकनिक पोखरि सेहो छलनि।

गिरहयक जमीन मे बसल छली। हमरा अपना जिनगीक सबसँ
पहिलुक बात एखनियो धरि कनी-कनी नोने हवे। मातृकक दूरा पर
हमरा बाबू केँ एकटा लम्हेसी लगाकऽ बान्हि देले रहै। एँडी सँ सिखा
धरि काँच करची हँ फोड़ि देले रहै। कसो-कसो देहक झाल नीचा गेले,
मारिक चोट सँ। आँखि सँ नोर टप-टप बहिकऽ गाल आ छाती होइत
नीचा बहल जाइत छलै। सँसि देह कारी मजीठ भऽ गेले हमरा बाबूक।
धोरवे दूर पर छोटका मालिक चौकी पर जमराज नाहित बैसल रहथिन आ
दहिना हाथ सँ मोड़ केरैत रहथि। हुनकर लाल-लाल घसल-घसल आँखि
देखिकऽ केकरा ने डर हो जेतै। हमर दाई धर-धर कँपैत मालिकक पए
पए छलै। आ बफारि सोइत छल, मालिक वो.....मालिक.....छोड़ि
दियो वो मालिक.....लकुआक प्रान छुटि जेतै ओ मालिक दोहाइ

बलाचनभा

१

सरकार हैं.....अहीं माई बाप छी, छोड़ि दिया। माय के कात
कनेत देखि हमहूँ भुकर-भुकर आनेऽ लगली। हमरा छोटकी बहिनक तब
उरे घाने सुखि गेलै।

कनीकाशक बाइ बुकलिये जे हमर बाबू मालिकक गाछ सँ दूटा बिगुन
भोग आन छोड़ि लेले रहै। काँचो किलुनभोग खाव मे चौंठ माहित बा
नीमन लगे छै। आम तोड़ैत कियो ने देखले रहै, बाबू बखाड़ी के दोग
बाम मोड़ैत रहै तखनिये कियो देखि लेजकै आ चुगली लारि ऐलै। ए
बात पर मकिला मालिक तानले आनि भंड रोखलिन आ.....।

हमर बाबू मरि गेल। दाइ केँ चोड़िया जर लगैत रहै। किछु मालिक
सँ लऽकऽ आ किछु इमहर-उमहर सँ ताकि-हेरि कहना फिरिवा-करम भइल
गेलै। हमरा गरदनिक छतरी कहना टूटल। दाइ वा दाइ दुनू गोटे
बिचार भेलै जे कीना मालिकक पट्टी मे हम चरवाही करी। दाइ नइ माने
ओ कहै एखनिये सँ काम मे जोति देवही तऽ करैत दूटि जेतै। मुदा माय
कहलकै—एखनिये सँ सरक काज-फिरि नइ करतै तऽ अवारा माहित
करतै।

किछुए दिनक बाद हम छोटका मालिकक मरिगक चरवाही करै गेली
छोटकी मलिकाइन केँ हमरा रखवाक कनिकी बिचार नइ दकनि, ओ घर मे
अडबज्जर कऽ देलखिन। हमरा देखिये कऽ ओ हाकरोस करऽ लगलखिन
ई तऽ बखाड़ी छून्च कऽ देत। अकादासन पेट छै एइ हाँडाक। जेद सेर
दिन मे खैत आ जेद सेर राति मे। सौंसे देह छोड़ा केँ पेटे छै। पेट छै
की कोठि से नहि जानि। मैए मे.....मीए.....।

हमर दाइ हमरा दिस दुखार सँ ताकि कऽ मलिकाइन केँ कहऽ लगलनि—
से नहि कहिओ मलिकाइन। हमर बलचनमा बड़ फग खाइये, रोटी, मफे,

मो, बाम, काजन जे देवै खा लेत। खेवा-पीवा मे कनिकी बखेदिया
रहये।

हम एकटा बिस्ती पहिरले रही। बिस्ती दिस तबैत मलिकाइन
देखलखिन—आ.....देख, कपड़ा-तपड़ा हम ने देखै। ई सुनिकऽ दाइ
मर ई तऽ लागलि।

अइपर दाइ कहलकैन—अहाँ नइ देवइ तऽ केँ देतइ? अहीं बावर के
अईठ-अईठ खा कए, अहीं बावर केँ केरन-कारन पेन्हि केँ हम सब अपन
अनिगी सुदल करइ छी। अन देवइ आहाँ स पोत मांगऽ खातीर सुत अनतऽ
कतऽ सँ अउतइ?

अइपर मलिकाइनक ओखि-मुँह चमकऽ लगलैन। दौत दसुफक फूल, ठोर
मलिककोइत पाकल कह—लरो, बड़ सुनारि रहथिन मलिकाइन।

एकहल आखर केँ चिवा-चिवा कऽ बजलौह—खायक दिअउन, भड़िया
ओती विअउन, कपर सँ दुअन्नी! बापरे! एते केँ देतइ? सब टा काज
विआवक पड़त, हुकबइत-हुकबइत भगज चालनि भ जेत।

दादी पैनु मलिकाइन केँ पैर पऽ लेलकइन आ बाजलि—आइ सँ अहीं
बलचनमाक माए-बाप भेलिअइ! अहाँक अईठ खा कऽ एकर दिन घुरतइ
मइतमाइन।

तकरा बिहाने सँ हुनका ओइठौँ हम काज करऽ लगली। ओना रहिअइन
तऽ भइषिक चरवाह, मुदा आमी कते तरहक काज कऽ दिअइन। नेनाकेँ
दगने रहिअइन, पानि आनि दिअइन भरिकऽ, दोकान सँ मोन, कड़ू तेल,
मशाला बुवा दिअइन, जांति मेहो दिअइन।

मालिकलोकनिक ई धरैना कोनो जमाना मे बड़ पैघ रहइन। बाबू जमी-
नदारी तऽ कम्मे सग छलइन, मुदा बाजब-भूकव उपए। नाल जाल चारि पट्टी
बलचनमा

मे बौटल । हनेली से कराक-कराक । गाड़ी-बिरुड़ी, बंसवारि, कलम, खदोरि, पोखरि, परती-परौत—एलवा भरि साभिए रहइन ।

छोटजन मालिक कहुँ मनेजरी करइत रहइथ । मलिकाइन बड़का घरक बेटी । हुनका लेखे बिना दूध-दहीक खेनाइ आ गोबर धाउल मिड़नाइ एक्के बात । से, ई सुजराती महीस दू सप्ते मे ओ मछवने रहथि । सेवा सेवा स होइक नहि, आ बाड़ी गेल रहइ मरि । तें विस्तुकिदे गेल रहइ । दुहापरक हाइ झक झक करइ । चरबाह पड़ा क कटिहार चल गेल छलइन । तखन कोनो दुसाथ रहल । ओकरा एकटा गोआरिन सँ हेम-हेम भऽ गेलइ । पकरल गेल त बहुमारि लगलइ । मलिका मालिक बइला देलखीन ।

आब तेवर चरबाह रहिअइन हम ।

अन्हरीखे महीस खोलि दिअइ । पीठ पर पड़ि रहिअइन ।

पहुँची में मोहरिक छोर लपेटि ली । भूत-परैत त तइजें महीस लग आबए नइ ; तहन खेतक फसिल चरि जाइ त अलवत्त । चरबाह केँ एकरे डर, आन कथूक डर नहि । सुदा हम जे चरबाही पैलो से नाथ रहइ छेठक । बाध-बोन खाली । चित भऽ कऽ सहिषिक पीठ पर पड़ि रही, ओ अपन मुँह मारने रहए ।

किछुए दिन भेल हेतइ कि ओ हमरा चीन्हऽ लागल । अइ सँ पहिने माए, दादी आर देवनी, इपह तीन गोटे हमर अपन रहए । आब नहिसिओ हमरा लेखे अपन सनाइ भऽ गेल । लाल-लाल पैघ-पैघ ओकर आँगि, भफलहा सँत अठखन हमरा बितरल नइ अइछ ।

भैंसी चरा आवी त बासि भात खाइ, कहियो कहियो एक लग चाउर भेटए त सपइ भिजा क फाँकी । कहियो अन-बड़िगनाए महुआ, की खुदीक रोटी पकइ तऽ तही मे सँ तोड़ि क आधा चाहे एक कीन हमरो परि लागए ।

बलचनमा

तखन बुलुर केँ कोरा लिबइन । दुबकइ रहथीन, से बड़ खिसिआह । सेना केँ भाम्हीबुधि जे की कहिअइ ! मलि काइन केर दू टा सेना मरि गेल रहइन, ई सेसर कोरा मे रहथिन । आब चारिम हेवा लए रहइन । नहिराक एकटा बुलबुआ खबानिनी रहइन से तकरो जेना हम बहिए रही । बाँहि बर्दे करऽ लागल तऽ हम बुलुर केँ लऽ जाऽ कऽ आनारा पर बइला दीअइन आ इलान दिम जल आवी ।

काजक डरें छीह कटइया कीटिआ !—मलिकाइन चिचिआइथि, आ से अही काने हम सुती । बइगने तऽ काल चलनिहार नहि ! लुरपी आ छिटा जऽ कऽ पास करए बइराइ । बइगफला खरमगडल ! आरि-धूर चऽ चऽ चऽ चऽ जरइत । मरि बाध ओन्हराहे तखन जाऽ कऽ पथिया-आध पथिया पास । धूरी तऽ आवऽ मे कोनो दिन बड़ बेरी भऽ जाए । तहिआ गिरहथनी ललकि पठथि जे नार जनिपिडा केँ ! कतऽ मिखतर चल गेल रहएँ ? कोन ठाँ बइसि केँ कोन क्षापक संगे कलछी भभइ चुले हएँ ?

कहियो कहियो चारि चटकन बइओ दइथ । तइ दिन बेरिआ भरि कनगट्टी लहरए.....

खुशी रहथि त सुखाएल-टटाएल पकमान, अमरत आर पिलुआहा आम, दुकड़ी लागल वही, माइक तेवालि फोर भेटए । तइ पर कइइथ की तऽ एहेन गल्ल तोहर एकइस पुरखा नइ देखने हेतउ ! बुझलह !

नइहर सँ भार-दोर चरोवरि अवइन । खगता कथूक नइ, तईओ मालिक परदेस ओगरने रहथि । बड़ मे जमा करइथ । आसरम छोट आ खर्च नापल-खोखल । गहना-गुड़िया वर्तन-वासन, नूआ-बस्तर, रेलम-पटोर सँ चारि टा बाइस भरल छलइन, तइओ नहा-सोनाक बीच आँगन मे डाढ़ि भऽ कऽ मलि-काइन नितइ बीमानाअ-दिनकर सँ अन-बीत मछथीन्ह ।

बलचनमा

महीन हम मोन सँ करावी। गाड़ी में, जसई-जसई गामक चरवाह सभक छुटान होइ। हमहू आइ तण्डलो में बेसी दिन भरि अलखुआर नइ रहलई। एक्के बतारोक तऽ लोक चरवाही करइत रहए। अढ़ाए पहर राति में के महीन खालिअइन से एक्के बेर सुन्हारि लौक कऽ अविअइन। अपन-अपन दुख बितरि आइ, आ खुब खेताइ हमरा आउर। कउखन कउड़ी, कउखन लत-भरा, कउखन कउआ दूही कखनो बासगांटी आ मोगलपटान, कखनो कलम में गाछ पर चढ़ि कऽ दाज-बाती..... क्रिस्मि क्रिस्मि केर खेल हमरा आउर खेलाइ। गोल बान्हि कऽ बइसी, लघुरी कका बइसी टटा खिरसा कहए, कान पाधि कऽ से चुनइत जाइ। चर-चाँचर सँ क्रिमजर-कइजर-सादल उमाड़ि अनइत जाइ, से तोहि सोधि कऽ लाइ। धतलोक आंगि में तरका कऽ अन्हइ माछ पकाबी त सेही भोग लगावी कहिआ-कहिआ। भरि गामक बाबू-भाइया लोकनि केर अदगाइ-बदगाइ हमरा आउर करिअइन। नीक-अधगाह सब कथुन भर्बा होइ।

सबूरी रहइय नाटे। जानिक बाबुक। कान धूँ सुन्न रहइन, कपार छोड़। ओखि बेस तेन हुदा भसल। अपना मालक सेवा ओ खुब मान लगाकें करइथ। चरवाह सब हुनका अपन पिछी-पिछामह जकाँ मानइन। मइइ कहिआ कोना भौली के मारने होइथीन, से हमरा लोकनि केँ कहाँ देखल, हुनका भौलीक ओखि में कहिआ केँवाँ काँची नइ देखने हेतइन। भरि छाया पानि में डाढ़ कऽ कऽ दूमिक नूँहो सँ ओ महिनीक पोट-पेट मलइथ।

एक दिन हम हुनकरिआ केँ सबूरी ककाक आउए भेटउँ। बइका मालिकक बयान बेश पैग रहैत। सोइह या बइइ आ चारि टा भैस। तकरा लाग तेन गो चरवाह। बूढ़ा ठामहि एकचारी में रहइ छला। देखलिअइन हुका गुइगुइये छथि हमरो। बूँ छौटकी नारिकेरबला हुका पिअइ छल।

बलचनमा

मजुरिक इमारा सँ लम में बइठऽ कहलनि आ फेनू पुछलनि जे सोरा महीन केँ ई दोसर भास भिकर की ने।

हमरा अजगुल लागल। कहलिअइन—कका, तौ कोना ई बात बुकि गेलहक।

अइतर पत्रकी मोड़िबला हुनक उपरका ओर फइल भ गेलइन, बजला—रथी, चरवाहिए में त हमरा आउर के जिनगी गुदरत भेल, एतबो नइ धुकवइ।

हुका छम्हेलीक भरे ओछटा देलखीन, चीलम अउरिह केँ फेनू बजला—मनिहरसँ भासि क आएल रहिथत आइमन बर्ब रहए। तोहर बाप लालचन सोरे एही टा छल हेतव.....आइ ड ड ड, दुक्तएँ! अइबेर महीन सोहर पाड़ीतरे बिपतउ.....”

तखन मइइ उठला आ बुद्धिआ भैग लग जा के धनरिस बइठि गेलइथ। पहिनी नजरिसँ अठउड़ी बीछऽ लगलखीन।

सबूरी कका हमरा बड़ मानइथ। हमरो हुनकर टहल टिकोरा में बेस मोन लागए। ओना हम रही बड़ गोआर, ओ धानुक। हुदा से नहि कहिओ बुक्ति पड़ल। खाइ पिअक कोनो चीज-बजल सेहम आँ हवेसी सँ भेटइन त वइ में सँ हमरा लेल किछु रखि टा करइथ।

मभिला मालिक के छुट्टी कम्मे होइन, तइयो छ भास पर छुट्टी कऽ कऽ दू चारि दिन रहि के बिदा होइथ त इसटीकन बिक्रीना बिस्तरा उठइत-बइठइत कहना हमही इअ अविअइन। गाम सँ मधुबनी अढ़ाए कोस पकिआ। याइ दूटि जाए एक लेखें। धाने पसेने मइ जाइ। आ तहन गाड़ी लाटफारम सँ चुतकए लगइ त मालिक दू गो पैता हमरा बिश बोग दइथ।

पइसाक मूट्टी, आ पइसाक बीड़ी। कौकैत-कुकैत गाम आओ घूरि कऽ।

बलचनमा

हमर माए अइ घर मे बिअहुता भऽ कऽ नइ आएल रहए, समन्व भेल रहइ। बाबू कमाइत रहइ डाका दिस कतउ, बाबू ता जिनगी गामहि पर रहल। सुइल त हमरा आउरके बडा चाहेक खेल दऽ गेल। थोड़ू जमीन पर ममिला मालिक नअरि गबओने। कहियो कतऽ दत बारह गो टाका देने रहथीन मादा कागज पर अउंटा छाप लऽ कऽ। से सुदि दइत दइत बर हमही खब लिबा गेली, कया भहि लिआएल हओ भाइ।

मलिकाइन दुअननोक हिगावें भरि सालक दरमाहा डेढ़ गो रुपइथा आगाँ पाछाँ देयिन तइसे की होअए। जइकालाक राति परलवकेर डमर बजवइत आवए। सभी आ चवमासा त कोनो तरहें खेपि ली, मुदा जाइ कटनाइ पहाइ म जाए। ओआवए खातिर दू ओड़ी नार पोथार आ देह काँपए खातिर गुदरी केथरी.....मतयो जँ नइ छुरए त पूसक राति जमराअक लहोवरे बहीन। बूड़-धुओँ लेल चाही गोइटा-करगी। से तऽ बेजेक माल-जालक हेतइ नहि। हमरा घर मे माल आखक नाम पर दू गोठ बजरी टा छल। है, बकरीक मेशरी जइकाला मे खूब काज थवइ ततथा भरि मोन अछि।

बुद्धिआ पोखरीक मीठपर बड़क गाछतर कोलहु टाड़ होइक। बाँसेक खांभखम्हेली, बाँसेक पाढ़ि, बाँसेक बरेड़ी.....पलहर में छारल बासीक चार, मात डेढ़ मात लए कोलहुआइ। तहिआ ऊँइख खूब पेरल आइक आ खूब गुड़ बनइ। हम दूनु भाइ-बहोन कोलहुआइ मे बेगी काल रही। घरर हाँकि दिअइ, कोलहुक ओरतर कुमिआरक टोनी दइत रहइअइ, भट्टी मे पतली कौकिअइ, खखीड़ि खखीड़ि क कड़ाइक पेट साफ क दिअइ.....बदला मे खूब ऊँइख चिबाबी, रस पीबी, गूड़क झाड़ी खाइ आ राति कऽ भठिए लग गरमा क सुति रही। कहियो कहियो नारी उडा कऽ लए जाए कागज त केओ बाजइ—

बलचनमा

“होइ ने इही, धर मे कोन दोलाता छउ जे बइ जाइ मे ओढ़ेबहिन, भने तऽ सुलज छउ।” जइकालामे मात दू भात लख साल अहिना चलइ।

एक दिन ममिला मालिक माए केँ चाल पाइलखीन। पाछाँलागल दादिओ नेलइ आ हमहु जुमलिअइ। स्कानपर बड़का चरकी, तइपर पटिआ ओलाओल। मालिक तऽ छलावे, गामक बुढ़ा पण्डित सेहो रहइथ। मालिकक हाथ मे पितरिआ टाड़ बला सरीला छलइत। सुपारीक कतरा पण्डित जी दिस बटवइत बजलाह—बलचनमा जा जील ता हमरा उपास देत रहल आ कमे एकरा लोकनिक लखि तऽ देखिबो...

पण्डित जी कतरा काँकि लेलइथ, दुदलाहा कनानी वाला चरमा नाकपर सेँ हटा कऽ कपार पर चढ़लैथ। कनीकाल भरि हमरा दिस तकइत रहि गेलाइ। केनू कहलखीन—जशोधर बाबू, अइ छथोड़ाक त बुड़ी बुड़ी चमकइ छइ। ईह, तकरइ केहेत सुलुर-सुलुर।

ममिला मालिक गुलुआ कऽ सूबो डोललइथ। सुपारी चिबवइत बजलाह—हँ गुल, भारी हरमजादा अछि। ओइ दिन भोजपड़वलवाला ठाकुर आएल रहथि। खवाल कने दुःखित पड़ि गेलइत तऽ कहा पडोलिअइ जे जॉति दहुन आबि कऽ से नहिए जे आएल बदतसवा।

हमरा दिलसँ दादी बाजलि—जॉतब पीचव सेँ चेतनक बुते ने होइत, बालचन तऽ कलहुका देह थिक। तहपर भरि दिनुका थाकल-ठेडिआएल, राति कऽ की कोनो होश रहइ छइ गिरइथ।

मालिक डटलखीन—“बोप।”

पण्डित जी मजरि नचवैत बजलाह—“राइं एइं पवित्र” मुदा मालिक केँ तऽ अपन गोटी कहुना लाल करवाक छलइत। निठकोला बनिमाएकेँ कहए लगलखीन—बलचनमा-माए, तौ तऽ जनितहि छेँ। बेर-कुबेर तीरा लोकनिक बलचनमा

खातिर हम कहियो अपन पाएर पाछों नहि कएल। दू केर काज पड़लख, तऽ चारि देखलख, पाँचक काज पड़लख तऽ दस। पलिवार ओहने अपन तोहरी पलिवार हमरा लेखें देखने। तखन की तऽ काज-परोजन भीड़-भाड़ ने कइखन तोरा समक अमेशा-कुमेशा सेहो होइ छउ-से नहि, मुदा महतो-आ बहिआ दुनू दू नइ होइ छइ, होइ छइ एकके। आन केओ काज नइ अबोतउ, कम-फुका गुरुक कोन-कमी ?

तहन जेनु हमरा अपना लग बजा लेलैथ, पीठ-पाँखुड़ पर हाथ फेरऽ लगलइथ। माएकें कहलखीन—बलचनमा-माए, तोहर दिन आव जइए धुरतउ। बैठा कमा कैं टाल लगा देतउ। दुख धोइवे दिन रहलअए।”

माए असह्यकक टाड़ी मेल ठाड़ रहए। ओकरा ई बुझइ मे ने अवइ जे मालिक कोन नाटक कऽ रहलैथ अए। दादी गुम-गुम छलि। हमहु रही ईइरखे। पण्डित तमाकु चुनबैत।

पण्डितजी बजलाइ—जे बहिआ महलोक हुकुम मानए ओकर जनम फेर बहिआ भऽ कऽ नहि होइ। आक-समाक की छीक तऽ नाइछ छीक। अइए जतथा उपकार होअए ततवे फल।

तखन मालिक एक बेर हमरा दिय तकलैथ, एक बेर माएक दिस। कमी काल रहि बजलैथ—काल्ह छिकइ धुप, परसू बिरइसगति, खजठली चलिहें कनी.....।

हमरा घरसँ पच्छिम मालिकक भीड़ खेत ‘तिनकीममा’ रहइन। कडा हुइएक हमरो जमीन ठामहि रहए, छोटकिनमी कोली दुनू मिखा देला सँ ओकोर भऽ जाइत रहैक। मालिक कैं ओहि जमीन पर नजर छलइन।

माए हमर गुम्मे रहलि, दादिओ। हम तहिआ ई सब किछी बुझअ नहिए। तमाकु धुकरि कऽ पण्डितजी बजलैथ जे ओ जमीन राखि कैं की करवे।

बलचनमा

कहियो चारि सेर महुआ, कहियो चारि सेर मुथनी, कहियो पथिया-आध पथिया अरहुआ....। हम तऽ ओइ बसरहा कोली मे कहियो हरिजरी नइ देखलअउ।

दादी मालिकक पाएर छानि लेलकइन, कलपए लागल—धोहाइ सरकार कैं, ललुआक बरजल जथा आव इएह टा रहि मेलइए। एमरी छोटि दिअउ मालिक। अहाँ आउर के कथीक खगता अइछ।”

मालिक हूँ हूँ हूँ करैत अपन पाएर हटा लेले रहइथ।

हमर माए कहलकइन—ई जमीन घरक नगीच पड़इ छइ। भिखो पूता चारि दाना छोट दह छइ त छुछो ने छुछो भइए जाइ छइ। बदला मे कइए अनतऽ दू कछा खेत देथिन से जाऽकऽ उपजतइ ? दस बरखक देहक इतें कोनासे सभरतइ, ईई कहलथ ?

मालिक उठला। बैवालक छुट्टीमे चोडा टाडल रहइ, तइए नीमक खडिका बहार कऽ अनलैथ। दांत छोघइत बजला—हम सबटा डीक-ठाक कऽ देख। एते लेती-बाड़ी होइसे छइक, तोहर दू कछा रोपल जेतउ तेहो कोनो दिन पूछि कऽ ? हर-बड़व, बोमि-बीआ जे लगलख से अगहन-पूसमे बऽ देल करिहइ।

हमरा नीक जकाँ मोन नइ अहि जे कोना माएके राजी कऽ लेलखीन मालिक आ कोना लिखा पढ़ी मेलइ। ओ दुनू कछा खेत पर मालिक कैं भइए मेलइन। बदला मे धानक खेत के कहआ जे अर्वाठाक ओ पुरनका निशान परजन्त नई आपस मेल।

मालिकाइनिक ओइठौं काजक कोनो कमी नहि। अरि दिन किछु ने किछु लगले रहइन। हम कनिको बड़ो, से खगलिनिजा कैं नइ सोहाइ। ओ हमरा कइखन दावत कइए, कइखन भकील। ई खगलनी मालिकाइन केर

बलचनमा

लोक ओकरा मलिकाइनिक साजी कुकुर कहइक। से, ओ मजगिया जखन
अवाच-कुवाच कहए, तहन हमर रीझा लहरए लागए। कौवन गात लीड़ के
पढ़ाए तऽ हम ओकरा खेहारी।

पछाति दुहनाइओ कीखल, लखरीका अहू में हमर मुख भेलइए। हम
पाड़ीक मोहें दूध छोड़ि दिअइ से मलिकाइन के नइ नीक लगइन। नकड़ू
खवास सँ अपन भैंसी दुहावऽ लगली तऽ हमरें मंडिआ देखिअइन। माल रहइन
हुनकर आ जूति चलेत हमर।

मास तिनिएक भेल इअइ की पाड़ी गेलइ मरि, से के मंडित बेचारी
बुकरए। की कहिअ—हमर कोन भाव? जहन बाबा करिसेसरक रहे मोन
रहइन तहन आन के की करितइ? सुहा एगो बात कहि इइ छिअ—हम आ
की सखी काका दुहइत रहितअइ त पड़इ घेरवाव हाइतइ? किन्तु नइ!
नहिराक छलइन, बड़ गलगरि। देखवागे बेश, सुमवाने फूटल थारी। हुनू
बाँहि पर बसुली बजबइत भगवान मोरज छलखीन। पहुँची से चरि चरि टा
लहडी, पाएर खापी। सुति-पाति से मजकक करइत। चारकर पादिक लवा-
ओल गाड़ी पेनिह कैए जहन ओ बहराए तहन बड़ नीक लगइ लोक के।
ककर नजरि लहन ओकरा धित नइ चउइ। अमकर तऽ की कहिअ मलिका
मालिकक नइइ खवास सेहो बकर-बकर सकइत रहि जाइ ओकरा बिस...

नीक-निकुत चीज-चउए मालिकक ओइ ठाम जहिआ कहिओ खेने
हैवइन, तहिआ अरटे कीइत। लाव अरठ खेवाक रोक आम भऽ गेलइए।
हमरा आउर अपना बूकऽ लगलिअइए के ऐँठ खेनाइ महा खराप काव
शीक। सुदा पहिने ई ग्यान नइ रहए हमरा आउर के। अपना गावक
भानुक, गड़गोआर आ केओट के बाबू-भइआक दँड खाइत हम देखने छी।
आब सुदा हमरा आउर कोनो बाबू भइआक छूट नहि खाइ छिअइन।

बलचनमा

पाहुन-पड़क अवइन तऽ तुलसीप्रलक चावर बहराइ, रऽहु—मोदनी
शिवबल जाइ, कुजरटोलीसँ मुलकी तरकारी अवइ, दूध-बही सहजहि।
भारक काते काते बीस-बीस टा चालीस-चालीस टा कटोरी। तिरहुतिआ
भलगावुआ अथुआन आउर के ओइ जइ खाइ-पिअक बड़ चहटकार।
अँइठ में तने रास ने चीज-बउरस रहि जाइक जे दू-दू तीन-तीन सौंर हमर
परिवार हुमचि-हुमचि कए से सब खाए। खाइत काल दादा बुकावए जे
सबओ ई थिकल कटहरक बड़, ओ थिकल रहुक पेटी, ओइ कात सकरपड़ीक
धुनिआ, एह! बड़ीक झोर केहन निम्मत छइ। चटनी में दुदीनाक पात
पड़ल छइ। दालि केहन सोन्हगर... सुदा अपना मलिकाइनके हाथे छोट
छइन, जेठकी बहुअरिया लकों कहीं थार सँठइ छइन। पाहुन जऽ लजाधुर
नइ रहथि लखने पेट भरतेन।

काज-परीजनमे जेठकी आर मकली आर छोटीक सब बहुआलिन के ओइ
जइसँ हमरा आउर अइँठ-बूठ हँसोधि लावी गऽ।

पाहुन तभक ओहो अइँठ गरिबइ के भागे सँ भेटइ। बात ई रहइ जे
मालिक जकों बहिओके आन कूटि कऽ कए टा परिवार भऽ गेल रहइक। हमरा
आउर मालिक-मलिकारए अपन बखराकऽ लेलेरही। छोटा मालिक हमरा
बखरा मे पड़ैथ। कहिओ कहिओ बँट-बखराक ई सिमान टुटिओ जाइ।
से तहिआ होइ, जहिआ लखौन-गुड़न-बिवाह-दुरागमन आ सराध-बखी रहइन।

दुरनका हवेली बड़का मालिकक हिसा मे पड़इन। हिनका आउरके
एगो निसनतान पिछी छलखीन, हुनकर हवेली दण्ड मण्ड पड़ल छलइ, नहिला
आर समिला मालिक नकरे गरभति करा लेलेथ। छोट जन अपना कए ई
सबे कोटा तइवार करवने छलइथ।

ई हवेली-खपडावला पोखरा घाटन रहई। बीच में फइल आबन। बूटा

बलचनमा

बखार से तही में उत्तर दिश डाढ़। मकानक सरगमीन सीमटी, पतखर
कएल। जइला केवार लोसोक। चारु कात चाकर ओसारा। दहिइन-पूब
कीनमे दुलही-चवरा, हनुमान जीक धाजा गाइल। लाल पतकझार
कड़गजीक चवरा महावीर ओ सीवक, बड़का मारुझवता। पड़वारि दिश
बहरेवाक रखा, बहार ईवाक दरवाजा के बलन क देला मन्ता एक दोनरे
संसार। दरवाजा सँ सटले छोर पर दूटा कोठरी। सोझा मे घेरल मरदान।
उतरवारि कात मालजालक घर। बीच मे काठक नगहर लादि, तकरा दुनू
दिश-दू-दूटा खुटा। कने हटि कऽ सीमिट केर लाल होद। ई रहइ भीनिक
खालीर।

बड़क सेवा बरबाहे करइन। हमरा जिम्मा खाली भैस। गाए एकी
टा नइ रहइन। अकरा सामरथ छइ से भैसे रखइए, गाए रखताइ बलिदक
काज।

हमरा मालिकक पट्टी मे नगरी बेश जमा रहइन। हुआ चानिक बीस
हजार रुपइआ गाबने रहइथ, बात सच होय भी पूति, दुदा लोक तऽ से कहये
करइन। उपका कोइन हजार मोनक। भादव-आसिन से बखारक मुँह फूलइ,
तहन डेओड़ा-सपइआ पर अकरा जेहे देवाक रहइन से देखिन। किछु बेचवो
करइथ। अइइआ-पत्तरी कहएक गेल के रखने छलइथ। एक बेर पूपके
फूदन मिसरक मलामाठ धान देमऽ एलइन। अपने उधि उधि कऽ अपने रहइ।
कहलकइन—तउलल छइ, मलिकाइन, तात मोनसँ बेसिए, अनलवँ रहइन,
तइओ ओखा शिथर।

गिरइथनीक हाथ बानल रहइन। हमरा चाल पाइलइन। कहलइथ
जे छीउन कामरतके बजा लवधिन गऽ, तउलिओ जेतउ आरइकमे दारिओ देतइ।

छीउन कामति केओड रहइथ। मालिक कछा दसक खेत देने रहथीन।

बलचनमा

बड़िजना छतखीन कामति। बारहो नास लागल भिड़ल देखिबइन। अवेर-
सवेर, राति-विराति, समए-कुसनए जहन परोजन पड़इन, तइएन मलिकाइन
हुमका बजबा लेथिन।

छीउन कामति एलइथ। उतरवारिआ अलइसँ तराजू अइइआ अनलइथ
फौड बानिह कऽ बइसला आर उललऽ लगला—रामहि राम, राम...राम...
राम; रामहि राम, राम राम इ; रामहि राम, राम राम सीन... की बीचहिमे
बरामहनी नजरि नचा कऽ बजलइ—ऊँ हूँ, कामति, ओ अइइआ कहीं थिकइन
ई? कने ऊरधु, लकधुन गऽ।

ता ओमहरसँ गिरइथनी थिथलता जकाँ चमकि कऽ इइ-इइइली—वेस,
आव किए ने सुरुत। तखन अनपुनी-लछमी कहिकऽ, अनकर पाएर नइ देने
रहिअइ आ कऽ। बेर पर धान नहि देने रहितहुँ हम तऽ तऊँ से गाम के बरम-
बध लगितइ। केर नहि भादव अउतइ?

मसीमात गुन मऽ गेलि। आन उपारओ तऽ नहिण रहइ।

धान उललल भऽ गेलइ, दू पत्तरी ऊपर सात मोन भेल रहइ। बेचारी के
एक पथिआ धान फेनू लाबऽ पड़इ।

ओहिना एक बेर करिमवक्ताके सेहो छिलमिकाइत देखने छिअइ। ओ
हरबाह रहइन। मोनि देवामे जे गड़बड़ मड़बड़ करथीन से हो ओहिना मोन
अछि। पुरोक लरम रउदा देखा कऽ मोनिबला धान इकमे रखबा लेथिन।
तहन छिनका ओतऽ एथटा बात नीक अवसले रहइ जे बेगता पर रुपइआ दू
रुपइआ लोक केँ भेटि जाइ, दस-पाँच पनरह-बीस लाग ककरो घुरऽ नइ
पड़इ। खरि मुदा बहुत कड़ा। डेढ़ पाइ कखन, कखन दइओ पाइ
ठेका देखिन।

बर्खा दू-एक अझार बरताख बितइत बितइत हमरा अबारमे तहिआ भाइए

बलचनमा

१५

जाइ, साथ समय पर खाली नह होइ छइ । रोहिनी मछुहार में पानक बीया सँ ठाम डीम बाध बेस-लहलहाइ बहिआ । शिरगाविरा-अरहरा में अगला रोपनी समपन भइ जाइ । साधानक दुनिमा धरि बरहर खेतक कनिओ टा कोली कलब खाली नह रहइ । बराइ समारस भइ जाइ, ओहूमे मडव घड कइ खेतसर निफिरि भइ आए । नदइ, गन्धरी काटि कइ थोइ खेत में काउइ राति लेअए तहन दलान पर बइसिकइ पचीसी खेलाए ।

हमरा समक परिणामि नहरि नहि छइ । अलनपरि इन्हे भयमानक भरीन पर लोक निमहल जाइए । कमला मइया ईसवर छथीन त पहिने कमबितो छथीन बेस ।

रोनी आर कउनो काल मलिआइन नहरसे जन महाबध । ताकुति रालइ तार पिसिअउर रहथीन । टामहि कनी दूर पर मुसहइ टोली रहइ । गाल माय, छोठ छोठ गोख, रिबारी लग माक आ बेहक रउ छावर जकाँ मुदा समनदारी आर मैहनति में मुसहरक नोकबिजा आन कोनी जाति के नइ कइ हेतइ नन्हायो आते अन्तइ नहिए पणवह । ओकरा आउर पचीन बीस समाक छल हएत । बुढ़-बुढ़क लेला त नहिए हेतइ । लग-पास में बल-पाँच टा जमहर बरवी आरा छलइ । अलाइ-माओन में जन-बानिहार नइ हुमइ लोक केँ ।

खेतीक ताक रहइन त मलिआइन माइखण भइ जाइ । दाइल-माइ, तइ पर सँ अचारक फाँदा.....आइर छूतत जाइ, बरइकी बड़की गो टोकना चइइ, बीन-बीस चालीन-चालीस आरमोय सोवालगाइ । गाड़ीपर सितलपाटी घड कइ तइपर तइ केराक पत्ता बिछा-बेल जाइ । ओइपर भाट आ टोकना में दाइल । चलेरामे तरकारी, डलिया में अचार । बीच बाधने बाहपर गाड़ी ठाढ़ होइ । जइस आउर जातिक मोताबिक करारक करार पतिआनीमे

दूधपर बइठर, छौवन केराक पत्ता पर अन परति देखीहिन । तरकारी बार अचार सेहो । जइस सब भरि पेट दूरि लेअए तखन केर रोपइ लागए ।

मोन तइ होए हमरो धान रोपवाक, मुदा काज एम्हर बढि गेल रहइ । मैसी आब एक गो नहि, दू गो रहइ । भिनसर चराकइ घूरी त बधान खरबी । गोबर काढ़ि कइ एकठाम जमा केने जइअइ, निछेस दोतर ठाम । गोतलाहा जगहक थाल काढ़ि दिअइ । ऊपर सँ पथिया भरि धलुआही माटि पतारि दिअइ । अइ तरहे मैसीक जागह केँ इन नकल राखी । गिर-हथनीक भाइकेर घोड़ा रहइन, तेकरो लिहो हमरे छटाबइ पड़ए । लादिके धो-धा कइ पथितर राखी । दलानक अकनइ खरझि दिअइ । खवासनी कोनो ने कोनो काल में अहाँनहि रहय—दसमनि ला, दोबान लो, नूआ खीच यहीन, फल्लो के घोर पाड़हिन, मसहला पोख, डब ने पइस, धान बहार कर, चिहो खपा अवहीन, पत्ता काटि ला, पीठ छूनि बहून, बलुरकेँ बुला लवइन देखहीन केवन पतलो खरझइ छउ कलम में, छुनइ छहीन बसवारी में कीवन ठक-ठक लइ छइ.....खवसिनया नथनहि रहए हमरा सहिरिहाल ! ने दग गो, ने बीस गो, रही त बलचनमा हम एक्के गो । मुदा ई बात बुझनिहार ओइठाम केओ रहवे ने करइ ।

अइ खवासिन केर कोखि जरल रहक, विद्या-पूता छुनइ छिअइ भेजे ने केलइ । सरकलही गाबइ केहेम बीथ । आर गबइत-गबइत खिलिया लइइ, खिलियाइत कोहि पाड़िकइ कानइ लागए—

मास दू माल पर अहिमा ओकरा भूत लगइ । तहन खन छरपण, खन कूड़, खन ढाल ठीकए, कोत्ता खोश क माछर भइ जाइ, जीह बहार कइकइ चिचियाइ.....हम काली नइआ थिकहुँ, बुढ़िया पोखरिपर जे गुलरिक गाछ छइ तहीपर रहइ छिअइ.....ओका छामर चढ़ा, ने तइ लइसे गामकेँ

भूजि कऽ खा जेवज.....

मलिकाइन कुमारी भोजन कबुला करधिन, रेशमिक अंगरु आर जोड़ा छातर से कबुला करधिन । हमरा कहथि, दानो ठाकुर के भजा अनुहुन गऽ । दानो ठाकुर तानसिरिक रहइथ । झाड़ फूक, पूजा पांड, टोना टापर सब जगइ छलइथ । आलक रंग से रंगल पीती लवनी फेहइथ । कपार पर लिमुरक बड़की टा ठोप । टीक तले पइथ लखइन के फीलि रेखापर पाछु दिह डौड़ धरि चल अवइन । हाथी दौतक सीटीक माला से लाल रेशमी मे गोंथल दू टा मूला, आर सेकरी बीच मे बड़की गो बहराक । लड़ीक गुरुठ ताननकरक मुँह राम रहइन ।

दानो ठाकुर नाम से बहराइथ तऽ धिया-पूता आकर के बड़ डर होइ ।

ठाकुर आवांथ दक्षिनवरिआ घर मे हुनकर आहन अवइन । मलिकाइन सोनी नइ अवधीहिन । बड़का भासिकक बेटी जगजला रौंइ रहइ, आर नहिरे बडइ । देखवा गुनवा मे छुनगर, काढ़ नाक, छेले धौंलि । से एहना रामए गिरहथनी ओकरे बजवा लेधीन । ठाकुर ओकरे पुवधीहिन, ओकरे अवधीहिन । दूतक बीहरि केर माटि, तीन अर्खक पुरान कूश, चारि ठोप गंगाजल, पाँच माछक सुवखल प्रसा.....यहो राठ जीअ अवस्त मिसइ क दानोठाकुर खवासिनके काहुऽ बइरथि ।

मलिकाइन ओकरा कीचा मे कसिक गेंठ य देधिन । छीतन आर कहलर घऽ-पकड़ि कऽ ओकरा ठाकुर लग राखि अवधिन ।

चिद जी गनतरा-गनतरा खवासिनिआक देह पर फूक मारधीहिन आ माटि फेकने जाधीहिन । हुनका औंलिहक इशारा पवइत देरी हमरा आकर घर खाली कऽ दिअइ, रहि जाइथ ठाकुर अपने आर खवासिन । केवाइ दन्न कऽ कऽ बहार सँ मिजिर चढ़ा देल जाइ । भीतर तखन झाड़-फूक सब

यलचनमा

घेर धरि चलइ ।

कती काल बाद भीतर सँ केवाइ दकदकावधीन त एम्हर सँ जिनजर खोलि देल जाइत । पाने-पतेने भीअल सिद्ध जी बहराइथ आ बंधीहिन के बड़ अबरवस्त भूत छलह ऐन खवासिन केर, कोनो धरने देह छोड़लकहए सँ हमही जगइ छी.....ओछन त बहराए नइ देधुन एकरा । अमरुला, ताकुलि रखि-हक कने ।

भूत लगइ त लखसिनिआक वहे पडि होइथे तऽदि भदवारिमे कमला-बलान आउरके होइ छइ । ने लाज-श्रीज, ने डर-भर, ने नाम-मर्दादा, ने विरी-धामन, ने गेआन-परान, ने चेत-मैत, ने डर-उकान, ने धोर-धाम । बाढ़िक पानि तऽ ने आरि-धूर धुअइ ? भूत की जिन बांके मछी के देखतइ, ओकरा आउर के आन नइ सोहाइ छइ से त बुरले गेवइ । वर्ष मे दू एक बेर मलिकाइनिक आहन मे हमरा ओकनि ई तमासा देखवेटा करी ।

एक बेर गिरहथनी अहिना ओकरा घरसँ घन कऽ देलखीन तऽ भीतर सँ जगजग केवाइ दकदकावऽ.....तहन अनन्त बाबू बजाल गेलइथ । ईहे गिरहथनीक भित्तिधरता-खलखीन, देल हुनगर, बेग मोट डौंठ । केहनो बरसा षोड़ाके अनन्त बाबू पानि पानि कऽ देधीन ।

दूनु तिरु भग कऽ केहनो मरजाइ सौंद के ओ सए लगग पौंछा देखि अवधीन । से, मलिकाइन केर परतान सँ जोड़ बेर भूतोक सके हुनकर लटा-पटी देखल । बड़ी कालधर बजारऽ देलकइन ।

गिरहथनी बेसीकाल हमरा आउर के सूतक ओ कुशती नइ देखऽ बइथ । कह्यीन के वज्र लोकक साक्षा मे भूतपिआसक तारैत चारि गून बढ़ि जाइ छइ । काइबला के लखसिनिआक एँडे अतंगरे छोड़ि देधिन ओ, जोतोरी ।

तिनिए चारि वर्षे महिसवारक काज इन केने हएव श्री दादी बड़ी जोर

यलचनमा

बेराम पड़ति । ओ रोग ओकर जान नई छोड़लकई । पेटक बेमारी एक दीग, सौतक दोतर थीम । पुरनकी माछी जेका दादी-देइक ईल-कौन मडकल झलई, उपर सँ ई बेमारी तऽ ओकरा सब था पत पीनि लेलकई । बोना गाम से ककरी किछु होइ तऽ मधुबनीक सरकारी अस्पताल सँ दवाई हाऽ बाधए । बाबू भईआ ओइ लक सदी-खोखी होइ तहुँमे जागदरे अवइ । अहाइ गो दपईया रहइ ओकर पीन, दू टका सवारी भाड़ा । अस्पतालक दाम कपर सँ बाप रबी । हमरा आउर से पद-भानि सेही नई गुमए बेरामर, कतऽ सँ अहितए जागदर आर कतऽ सँ दवाई ।

गाम से एकटा बदरजी रहइथ, फट्टी निगर । उई आधि कऽ देखलखीन । आठ-दस पुड़िया दवाई देलखीन । बदलाने एक लखड़ा सहरा हमरा एऽ बावन करलइथ । भादव रहइ की ने । रउदामे पित बगदि रेल । दादी के रोटी-खोशारी नई पचइ, भइगोल भात एक चाटी खाइथ । सुदा घरमे चाखरें नई ।

मकिला मालिक राति के हमरा सँ जंतवइथ । पोतपर बड़ी धेर सुका लगवावइथ फेर दोतर करोट केइथ । कतेकालक बाद छुट्टी पावी । छप घेर कहरे रहइथ जे जहन जे चाहिअउ से कऽ बइछएँ । अही मरौस पर सेर भरि चाखर मकलियेन, एक दिन नऽ लुछुआ लेलइथ । पाछू पाओ-डेहक देसो कैलइथ ।

माए दादेलए एकमुछी चाखरके गिन्हकी राइन्द दइ ।

ऐके भहुँका भात अवलम रहइ, सुदा से सब दिता नई । लखमासक थालकीचमे पाइनी-परक नहिअ अवइ । भइतारि ने पहुनाइ करए लए नई ने बहराइथ लोक ! पनिथाल बाध मे भरि छाती भाजक बीच दने ककर मंजाल छिकई जे चलस ?

हमरा पलखतिअ ने हुअए, देरपर दवाई भानि बिनिअइ ततवो नई ।

अलचनमा

दादी के हमरें बड़ कायेव, हमरी ओकरा खातिर जान जाए । चरबाहिष पहिने भरि इन ओकरे बाँहि के गेड़ुआ बनावक हुतइत रही । केहनो चीज दादी कसब सँ कायए तऽ तइमे सँ किछु हमरो अवरसे पईर लागए ।

मुइल तइसँ दू दिन पहिने ओकरा रोग भेइइ माइक साना सबे भात खेवाक । चुलीक ओतऽ सँ वगसी आगल बुढ़िया पोखरिक बुद्धिमबरिया नोहाइ पर तुलसीक ओइमे जगह ठिकिओलउं । चाली गौंशि केँ बोरि देखिअइ—पायल बनती गोसैलाक नाम लऽ कऽ । नजर छल तरेंडा दिह ।

मकिकानक कयो अइ पोखरि मे ककरो बनसी खेलाइत देखइ तऽ गरि-गरि-फुल्लिक अन्त नहि रहइ तकर ।

कनिएँ काल बाद तरेंडा हिललइ तऽ आन-परान कुलम आधि कऽ ओखिक हुनू डिम्हा मे मोलौव ।

छगी छीपल त देखराक दरगम भेल । बोरी गाइक ठारि-धात मे ओकरा भेलइ । सोझरा लेल तकरा । तहन बदसी सरोटल । गलकई ओ मुइवाटें इधिक डोट पडसो केँ देखरा केँ लटका लेल । एमि कऽ आवन बएलउं । माए माछ पकवऽ लागलि की बीचहि मे खबतिनिआ छुमि भेल ।

हाथ स्वसका कऽ बाजलि—चलह ने, आइ त डुमवे करबइक जे बुढ़िया पोखरिक गछरी केहन सोयदगर होइ छइ ।

दादी ओछान पर पड़लि रहए । खबतिनिआके सरसरी सुनिं देरी ओकर ओखि खूबलइ । अन्हार मानिमे जेना खइयाक नजरि चमकइ छइ तहिना दादीक घसल ओखिमे डिम्हा चमकइ । कइल जोड़ि कऽ ओ रुप रहऽ कहलकइ खबतिनिआ केँ । हम माए के बुका देखिअइ जे कोनो अन्यैसा नहि ।

खबतिनिआ आगों आगों, हम पाछों पाछों । बड़का मालिकक पड़वरिया रोनहलाक अइइ देने अवइत रही ।

अलचनमा

बनासुरहे पाछों घूरि कऽ ओं हमरा सुम्मा लऽ लेलक आर पैजिआन
जानसि की पैजिआन दु थापड़। मारि कऽ पड़ा पैजिआन।

कोई दिन गौश्रक्षम गिरहधनी जमनल बाबूक हाथे हमरा मारि
खिलवजायि। तहिआ सँ पहिने अइ पौनपर कइची नइ बजरल रहए;

एकरा सेमरे गौश्र वादी मुँह बावि देलक।

हमरा आकर मे पहिने तेहरीक रेखाज नहि रहइ। गहर मे अलरेज राज
करण, श्रेष्ठ में जिमिदार। जनम सँ लऽ कऽ सराप धरि डेग-डेग पर बाजमक
वृत्ति चलइ, बात-बात मे पतिका लिखवक पड़इ। मनहिब तम छोड़का
जातिक लोकसँ अशमक बड़ असुलधीन तहिआ।

जहाजलि बड़का मासिकक पैदा जोरे पटना रहइ छल। दूनु गोटे
बतारी रही। कोलेज बन होइ छुडीगे, ओ बाथपीहिन तऽ ईशो आवए। कमीक
निकर पेन्हए, पकी बोली बजए कछखन कछखन। गलबकिआक ई बागद-
बादन हमरा बेग बढ़िका बूझि नइए। सेहता हुअए जे पटना श्रेष्ठिअइ
कनी।

बाबू लमिरो तबब बरखक मऽ गेल रहए। चरवाहि नहि सोझए शिलिओ
भरि।

माए आ रेमनी कहूना जपन निमहए। खुदी-गूझ, गहुआ, कोदो, साध-
पात... कहूना जपन खेपने जाए। धान कूटहन, चूड़ा कूटहन, चिकन पीय
दहन, घर-आंगन बड़ाई-नीनि दहन, पेडिआसँ सखोदा-वादी आनि दहन।
अईठ-कूड लठवहन, दस्तन बासन मँजहन, पाणि भरइन। कछखन कछखन
जाति चीचि दहन। अइ अब काम काल रेवनिओ कँ संग कऽ लइ।

गिरहधनीक भातिज पटनामे पढ़इ छलखीन। होटल मे खाइत हुनकर पैठ
खराप मऽ गेल रहइन। एगो आदमी के खगता रहइन हुनका। बइ लए
कोनो पकडोस, कोनो चलाक सोलकन्ह केर अहरति नहि। आर, ओहैन
आवधी बेसी बेसी दिन रहबो तऽ नहिए करितइन।

हमर अस्थे नातिह टा रहए, देहक लौंचो नइ छोड़ रहए। युमश अछि
के बाप-पितामह हमर कऽ हाथक लहासबाला छल। माए पिडितिवाम तऽ
रहए गुहा सुष्टि नइ छति।

मलिकाइनिक भातिज दधनीक लातीलेमे आएल रहथीन। पाँच-सात
दिना छलखीन। पक्ष पक्ष ओखि, ठाढ़ नाक, चाकर कपार—वेस खाप-
धरत रहथिन। सोभाबक मधुर, गप-सप काल कनेमने मनकाह।

गहर दिन लठइ तऽ हम प्राप्त छोलि कऽ घुरी। तइसन ओ हमरा हवेलीक
भीतर बजा लइय। नहेका सँ पहिने नातिन ओ हमरे सँ करबइय। येर
बैठ गुदगर रहइन। रोशो मैहो सुलकी छलइन। चिकनर लए कऽ हम
हुचक गत्तर गत्तर दूहि दिअइन। चानि पर कइक तेल नइ, कोनवन लाल
तेल लागवइय। बेसरमजन की भिरगिराज, मने कीदन नाम रहइ तेलक।
हमरा मातिस-तालिह तऽ करए बाथए सादे बाइस, वहन चिकनक सानस

लोइया के बेना मोदिआइन मुकिलबई छई तहिना मुकिलबईत रहिअइन यही कालधरि । कहइथ जे बड़ बड़िया लगइअए रथी ।

एक दिन मालिस केलाक बाद पुइलइथ जे पठना रहथे हमरा संगे । सहरमे मोन लगतइ ।

मालिकबला फटलाहा गनजी रहए देइ मे, मारो छेथे रहइ ओइ मे । भेटक सोमो एसी छेइ ने अतुपीमुलिअरमे इन मारी जगुनता मे पड़ि गेली । की कहिअउन की मे कहिअउन, इन की आनइ मोलिअई जे एहेन बात क पुइलि देता ।

तइथो कहलिअइन—मलिकाइन के पुइलअइ सरकार हमरा पुइलि कइ होत ।

अइपर ओ कहलइथ जे सोहर माए के राजी भइ जाइ तइ पीसी के अपन इन बुना वैबइन ।

इइलइक हवी माइ, मेवी सैह केसई । माए इतर चर बनी तइआर भइ गेलइम । गिरहयनी के सेहो मोन पड़लइन ।

मलिकाइन अमनामतीवा के फूल बाबू कहथीहिम । सभ हुनका सेरे कहइन । हमहु फूल बाबू—फूल बाबू कहइ लगलिअइन । सुदिआ दौत तनी तनी ची बड़ दोध लगइन । बजथीन तइ लमइ जे फुलडाली सँ सिंहरहारक फूल खसल जाइ छई ।

फूल बाबू अपना पीसीक ओइया लाल मे दू-एक खेप अवस्से अबइथ । हमरा माइके हुनक सील-गुमाइ गमल रहइक । ओ चंगेरा कइ कइ कइक देर हुनका ओइ ठाँ जाइत अवइन । नहिआ सँ मार-बीर अवइन तइ गिर-हयथीओ चंगेरा-तंगेरा पठविते रहथीहिम ।

असरा दिन लिलकण्ट देखि के फूल बाबू अपना गाम गेला । एमहर

गिरहयनी के चरबाइक फिकिर भेलइन । ओना कहथीन तइ इहे जे मर, चरबा-होइ कोनो धठी । एकटा जेतइ तइ एमारहटा आउत । सुदा कहवा मे की लगइ छइ । मनुख मनुखे धीक । हाथ-गोड़, नाक-कान, खोंलि-मुँह सब जानवर के रहइ छइ सुदा दिमागि मनुखे टा के होइ छइ । भैंसी चराबइ की गाए, बकरी चराबइ की भैंडी, अकिल तइ चाइथे करी कनीमनी । अहिना भइ जइतइ ई काज तइ बड़दे ने बड़वइ चरबाइ होइतइ । खरबूज-खीराक खेतमे लोइ छुहा गाइ देइ छइ । खपड़ी ने चूनकचेनइ सँ अँलि-नाक-मुँह बना कए तकरा अउनइ बइ छइ जोर सुहीपर । दू सुडी सुखल धास तइ कइ हाथ-गोड़ बना देइ छइ । सुदा ओइ नकली रखवार के कोइ पुइलि छइ । मनु-कलक बचा टेप-चेप भइ धिकइ जे अचहि मोन भेल तसहि सँ उठा आनल ।

रो, मलिकाइन के मोसिकल भइ गेलइन । चरबाइ भेटवे ने करइन । दिन दोहेक बरपला छीउन, तहन जा कइ एगो बूड़-बहीर दुसाध चरबाइ भइ कइ एलइन । इनरा भैंसी छोइइत बड़ अवगोच भेल । सुदा अपन साथ तइ किछु रहए नहि । तइथो बुइवाकेँ सबटा बात बुझा सुभा देखिअइ । दू राति संग रहि कइ भैंसी सँ चिन्हारए करा देखिअइ ।

पखेव आर हराहरी एके दिन होइ छइ । तकरा बिहाने हम फूल बाबूक ओइ जग जाइले बिदा गेलथे । गिरहयनी छीउन के संग कइ देखइथ । माए दू दिन पहिमे सँ जोर बहवइ छलि । आंगन सँ बाहर भइ कइ गोड़ लगलिअइ तइ डोहि पाइ के कानइ लागलि । हमरा कीड़ फाटल तइ डोर काण लागल, खोंलि नोरा गेल । मुँह सँ एकी जाखर बील नहि फूटल । सूडी गोतने बगन पेड़िया भेलथे ।

बाप तइ हमरा लेखे कहिथो भेवे ने कएल । जा धरि जीत ता कहिथो कलकला, कहिथो बाका, कहिथो नकपाइगीडी तइ कहिथो देनाजपुर ।

कपार, नाक, मोड़ आर कान, ओकर एतने हमरा मोन भइल। माया बड़की
नो रहई। दादी जइसे दाखिल छल। ओकरे कोरा मे ई देह पंगल पालल
रैल। नाए उहिया कहबो करइ जे देखी ओकर सिधइ आर हम छिकिअइ
बुढ़ियाकर।

मधवन्नी तँ तमोड़िया गाड़ीपर मेकिअइ। छीवन के देखल सुनल
रहल। मुन्हारि मौन खन हमरा आउर भूल जावू ओइजन पहुँचल गेली।

ई फूल बाबू गिरहवनी के अलग भासिन नइ रहलीन, बसमाहरे भाइ
लइका रहसिन। मलिकाइनक बापके तीन गो बिधाइ। पहिल बिधाइ
दीस कोनो बेडा बेटी नइ, दोसर बिधाइ दिस पूरा बाबूक बाप, तेसर दिस
गुनमन्ती देखी अखतार लेले छललीन। ईह हमरा आउर के गिरहवनी छलइय।
जथा-जाल सभटा भूले बाबूक बाप के भाग मे बइलइ। मलिकाइन के बापक
घन मे सँ दले बिसडा जमीन पर लगलइय। बागन-छड़ी आउर के ओइजन बेडा
अछइत बापक घन मे बेटीक कोनो बखत नइ। जे भेटत ते हथ उठाइएमेटत।
बेटी जा कुमारि रहलइ, ता खेलकइ-पिलकइ, सभ मिथारकेलकइ। अइ सँवाड़ि
किछु नइ

सइयो भाइ-बहीन मे कुभाव नइ रहलन। फूलबाबूक माए त ननदिक
लेल जान देखलिन, पहन भाउगि नइ देखल।

छीवन धरि कऽ गाम चल गेल।

तीन चारि बिहुका बाप छडि-परमेसरीक परमाद गँह मे दइ कऽ हमरो
आउर पटनाक अउरा कणल। चामक नाम रहई लखमचली। लखनछलीवं
तमोड़िया तीन कोन उत्तर, कने पुसाइत बगलगाड़ी पर अबइत मेलिअइ।
बसु-जात तले बेटी नइ रहलन। एगो घटकेन, बिस्तारबला होठबाल, छोडकी
टीन मे थी.....ई सब तऽ रहबे करइत। एकरा अलावे पथिया मे चूड़,
ठकुआ, छचुर-टिचिया भरल रहइत। केराक पत्ता मे लपेटल अचारक

पाड़ा लेहो बोहि पथिया मे। एकटा डाली ऊपरल दइ कऽ पथिया सावेक
कड़इ सँ नीक अर्को बान्हल रहइ। वन्हयो छनतो रहइ तइयो पथिया
मइमइ काइ।

टिकट-तिक्ट मालिक अपनइ कटलखीहिन। कनी कास थकिकऽ
भपटिआही दिसलें गाड़ी एलइ। मेला-ऐला भइ रहइ तले। बइलमानो
रहबे करेन। लागिनिडिकऽ मोटा-बोटा कहा बइत गेलै।

गाड़ी फुललइ। अगुड़िया तहन कंसारपुर, तखनी मनीगाड़ी, तकरा
बाबू सकुरि। सकुरि मे मेल खेलकइ गाड़ी। दोसर जाइत रहइ पंडील दिस,
बारसराए सँ आइल छलइ। दूनु गाड़ीक ऐजन पानि से हो सकुरि मे
दिसलइ। फूलबाबू उतरिक ककरा इनसँ ता गप करइ छलइय।

ऐजन पुछी देलकइ तऽ मालिक गाड़ी पर जइ गेल।

सकुरी आर दरिभङ्गाक बीच मे एके गो टीवन पड़लइ तारसराए।

दरिभङ्गा लखन के हवाही कहइ छइ लोक। जइदाम बड़ी कास
गाड़ी ठरा रहलइ। हम तावेगे उत्तरि के लवी कऽ एली। मालिक लाटफारम
पर टनलइत पुलीत रहलैय।

पहिले पहिल हवाही टीवन हम देखलिअइ। एते लेन, एते रेलगाड़ी, एते
ऐजन पहिने कहाँ से हन खेलबै। बाधा बाँहिक कारी कुता पहिरने कुली
आउर। खाखी रकक कोट पेन्ट पहिरने टी-टी-ई। मोपाकिर सभ सेहो
क्रिमि किसिम के कनडा पेन्हने।

हवाही लखन मे दू टा लाटफारम छइ। अइ पार सँ ओइ पार जाइलए
बड़की गो गूल से छइ।

ठाड़े ठाड़े लोक के हवर-हवर मोहारी-तरकारी मिछैत देखलिअइ तऽ नइ
अनइत लागल। मेल जे खोचोरी, बड़कि के किए ने खाइए। बोली से

कए तरहक सुनिधर ।

एक गोटे फर्दी छपलाहा कागज बेचैत रहइ । बाधू ओकरा सँ ऊ कामत किनलइथ । पाछाँ हुकलिधर जे लोक ओकरा पुखवार कहइ छइ । ओइ मे हुनिआ-जहान के खबरी छपल रहइ छइ ।

एहन दुकी देलकइ आर सुगुआए लेलइ त फूलबाबू गाड़ीपर चढ़ल । लगेमे आबि के बसल । अइसी सँ गाड़ी खूब रैल कऽ देलकइ । नीचाँ पहिआ हडाक हडाक करइ । कील आ धूरी सब डीलइ त डिल्ला आउर दबबर दबबर बावद । ऐजन मजककू काली कजककू काली करइ । भीषे मे एक गोटाके पुछलिधर—गाड़ी एना किए बअइ छइ ?

ओ कहलक—पहिले पहिल गाड़ी चलए लागल त अउरजे बहादुर के मारी सोस्किल भेलइ । काली माइ दकलइ ने देखीन । छोटा साठ अपना देखलक जे तए जाड़ा करिआ छानर कालीजीक चाहिएन । तहन ऊ कलकसा ने टिल्लिगराम कए बेलकइ । एक्केवेर तए जोड़ी करिआ छानरके सोनिब फिलखीन से काली माइक बीह चारि आउर छोट भए गेलइन । तहिए तए ऐजन काली माइक जै-जै कार करइत चलइ इइ कजककू काली कजककू काली शपथकाली..... सुनइ छइक ? ताके त कहइ छइ ।

ई बात सुनि कऽ गुन भऽ गेल रही । आव कोइ ई बात कहत त पतिए-बद, मुदा ओहि दिन तऽ भोजइ आना सँचि बुझि पड़ल ।

गाड़ीमे देह सेना ने डीलइ लागल जे की कहिअइ, हुऐ जे गिरइथक कलममे मजकी फूलइ छी । कनी काल बाबे ओखि मरग गेल ।

अथा सँ निम्न दृष्टल तऽ गाड़ी समलीपुर आबि गेल रहइ । ई जकवन तऽ अरिमबूखी सँ पड़ल ।

अइ अइ हमराआउरके गाड़ी बदलेके रहल ।

हगर बिचार नइ रहए, मुदा फूलबाबू जिह धेलइथ जे एगो कुली कइए ले ।

कुली बीभा उठवलक । धी बला टीन हम लेली । पूल परसे ओइ पार भेलिअइ ।

लाटफारम पर सारें लोक । किसिम-किसिमके चेहरा-मोहरा । किसिम-किसिमके पहिरन-ओहुन । बोली रानी मिफड़ाएल ।

मोटा चोटा बाकन-बिस्तरा नीचाँ धेलक कुलीवा । गाड़ीमे बिलम रहइ । कुली अपन फल गेल । मालिक कहलइथ—चूआ ठकुआ बाहर कऽकऽ । खाऽ ले ।

अही ठाम ?—हन कहलिअइन ।

मालिक कहलइथ—तऽ, की हेतइ ? देखइ नइ छी, कले गोटे तऽ खार छइ ।

ठकुआ तुरए टा जेलखीन मालिक, एगो गुसबा । खीठि कऽ अचार । हमारा सँ हुका देलइथ तऽ कल सँ पानि आनि देलिअइन । टोटी जोर सँ दबउने रहिअइ से छातीपर-कपारपर पानि पड़ल रहए, हवर-हवर बोझि नेने रहिअइ तइको मुखल तऽ नहिइ छले ।

गोख पातेक कुचुर आर तिन-चारि गो कल्लर छथीइ । फूलबाबूके घेरने डाढ़ । भइ तामग छटल । हाथ एसाहलीअइ तऽ ऊहे भना केलैथ । कुचुर आउर तऽ जे से मुदा कलरवा तब के अनभेज भेल जाइ, बीच बीच में ऊ आउर बाजै—“बाप रथो बाप, सबटा खेने जाइ छथीन मालिक..... हमरा आउर ले नइ रह देखइ, सरकार !.....” एवना कहइ आर कनवाक भंगल करइ ।

एहनाने कहउँ खाए-पीअल जाइ ।

उई खाएल मेलेन तऽ मालिक पत्ता छोड़ि कऽ छिटि गेलैथ ।
कलारवा सब अपनाने छुड़ुरे माझी कटावेल करऽ लागल ।
हाथ ची कऽ एलेथ तऽ कहलैथ जे तो माझिए पर खइरैथ ।
कलीकाल पर कठिहारवाली टरैन एलइ तऽ कुलिशो दलगतल आएल ।
रेड। चेस दुलइ, मुदा हमरा आउरके जगइ छैट गेल ।

ई गद्दी अमीनगामज आएल रहइ, जाइ चलइ एलहाबाद । हुनकर भारई
चुलकी कमतिवा मय अवइत रहए, जपरा-बलिवा दिन अपना अपना पर
जाइत रहए । बु गोटे रहनी रहए जकर बोली नइ इमिअइ । पुखलापर
फूलवाबू कहलइथ—ई बडाली शीश, धडला भाखामे बगइ जाइअए । तते
हजर-हजर बजे जे सिद्ध नइ बुझये ।

मुदा फकली ठकुवा खेती । दानि धेने रही लौटागे, से पीवि गेली ।
तहन जे भरठजे मे आंखि मुनलिअइ ते हाजीपुरके बाद निम्न दूटल । हाजीपुर
आर सोनपुरक बीचो बीच बड़की टा पुल लइ । गण्डकीके अइ पुलपर मझी
एलइ तऽ तती ओर सँ हड़ड्डाए लगलइ जे की कहिअ ।

फूलवाबू हमरा कहलइत—देखही, दखिअन भर ओम्हर भारके पारने
इजीब जे देखइ छहिन सणइ पटना थिकल ।

आरो सोरी ! हमरा मुंड सँ बहराएल ।

बाबू कहलइथ—मुदा गाड़ी तऽ धूरि कऽ जेतइ । एखन चारि घण्टा
लगतइ !

एतनी दूर जाइगे चारि घण्टा ?

तऽ, देखइत ने रहिन !

ताबड़ि मे सोनपुर आवि गेलइ । गाड़ी ठाढ़ गेलइ ।

केनू कुली केतखीन मालिक ।

घटडी गाड़ी लगले रहइ । कुलीवा ओम्हर तऽ कऽ बइसा देलक । राति
पहचरि छल होतइ । गाड़ी चललइ तऽ दकर दकर बजइ ।

बहलैवा पहुँचइत पहुँचइत किरिन फुटि गेलइ । सामने ओइ पार महेनर
वाट ।

सलले गाड़ी खलाल भऽ गेलइ । जहाजदित धरोहि लागल । बुकि
बड़ जेना बीहरि तँ बहार भऽ कऽ लोक आगू मुहें समरल आइए । धक्का-
बिस्तरा साथपर बोक्ने कुली आउर नसिजरके धकिअबइत चलइ । हमरा तऽ
अकबक किछु बुरये ने करए ।

जहाज पर बरगलहु । फूलवाबू विस्तराबला मोटापर बइठलइथ । लोहक
बड़की मो नाओ, तइपर काठक कोठा । इहे तऽ मेल जहाज । जहाजक
बीचो बीच भाकर-चउकोर छाधि मे भातें मसीन, गाँव कल-पुर्जा । लोहक
तार आर जालीवें धरल रहइ । फूल बाबू कहलइथ—जहाजक ऐन्जन
बिकल ।

ओ तऽ जा कऽ वैसि रहला मुदा हम बड़ी कालधरि जहाजक ऐन्जन
देखैत रहलहुँ । एह, धन कही मनुबलक भगतके ! तोचइत-पोचइत
बिचारइत-बिचारइत कलमे कल मिरवइत गेल, पेच पर पेच जसइत गेल...
इपरकोइलाक आँच पानि गरमाइ छइ, ताहीसँ भाक तइआर हीइ छइ ।
भाकेके ओरे जहाज आर रेल आर कल-करखाना चलइए ।

जहाज पर बइसवाक थिच-कुसी नहि रहइ । थक किलात मे माल बाल
झकौ जकरा जेना मोज होइ से तहिना कइए-बइठए । एखवारबला बुलि-
बुकि एखवार धेचइ । जिमिया बडाम बला सेहो अपन सओदा बेचए ।

ऐन्जनगैइक मोट-पातर दोटी आउर खून सुसुवाइ । बहार मे जहाजक
दूनु कात बड़का बड़का पंखदार पहिया घुमइत रहइ आर जहाज छर-छर

तर-तर पाणि कटइत गंगा नद्याक धाती पर आगू चढ़ल जाइ।

महेनर घाटक जेटीसँ दू हाथ पराके जहाज उरा भेलइ। कुली तब
इमाधन कऽ मोलाफिरक गेलाभे पहुँचल। उतरे खातीर लोक सेहो फाँसे कावे
तइवार। जहाज एकभगाह भऽ गेलइ। हमरा डर भेल जे कलटि ने जाइ।

फूल बाधू फेनू एगो कुली केलइथ।

तीरा-चालीस सीढ़ी टपि कऽ ऊपर महेनरघाटक दीवन रहइ। तबरा
बम्हर टमटम आ रिकसा ठाढ़। तहिआ साइकिल रिकसा नइ, हाथ रिकसा
रहइ। आब ओ रिकसा छठि सेल छइ। ओइमे दुइए गो लका रहइ आर
आदमी दूनु हाथे दूनु बंटाक छोर भऽ कऽ ओकरा घीचइ।

मालिक एरो रिकसावालाकेँ ठीक केलइथ।

गजुआटोलीक भीतर एगो छोटकिनमी गली रहइ, तहीमे डेरा रहइन।
रिकसा बासापरि आवि गेलइ।

डेरा ई फूलबाधूक अयालवन रहैभ। कहलै रहौथ, दुहा वाता ई थरोचरि
रलइथ।

मकान छलइ बनिकाकेर। आधा मे अपने रहए ओ। आधा मचखीने
छल नाड़ा पर। बीच आकनमे इनार तइपर सँ छहरदेवाली। आधा इनार
ओम्हर पइइ, आधा इमहर। दूनु दिगुका बोल बए दिन कुइनामे लड़ि जाइ।

भाड़ा रहइ दस चपइआ महीना। दू टा कोठली, भनसा, पएखाना।
कमी टा अकनइ, दू चक्की जोकर ओपारा। पुरान केवाड़ीवाला दुआरि।
ऊपर छपरा। कोठलीक कररा तऽ पछी, मुदा आकन कचिया।

बतैन-बागम सभ टा रहवे करइन। महीना भरिके चालर-दालि-नीम-
तेल मसाला आवि गेलइ। दू मीन जारनि। एक दाकी चिपड़ी।

मानव करऽ अवइत रहए हमरा। कमी गनी जे माकठ छल से फूलबाधू
अपनहि गिखा देलइथ। पयऽकोइकाक आँच पर रान्हल दालि-भात हुनका
नहि सोहाइ जइइन। तोहारिओ नहिए खाकिन। पनपिआइ मे चारिटा
बिसकुट आर बिलास भरि गरम दूध। कहियो कहियो हलुआ से बनवावइथ।

दोसरें दिन मालिक हमरा निकर आर हाक कमीज गिखा देलइथ। कैत
छँटवा देलइथ नएआ सँ "ललकी साइन के टुकड़ी सँ गाय मलि-मलि
नहेलइथ। नइ ने मानलइथ। कहलइथ—ई पटना थिकइ, गाम नइ

मिथइ। माया के बगइशोक बनओने रहने तऽ लोकें जगइलुक बुझतइ।
सहरने रहवाक छट तऽ आठमी घनि कऽ रह।

मासिकक नजरि ब्रजकऽ एना मे ओइ दिन हम बन गइ देखत तऽ
हमरा रमलसौना मोन पडल—एह ओ हमरा सेन सुभर कऽ सँ आउल ?”
कनी गामक लोक बालधन कर ई सहर देखिअइ।”

दू-चारि दिन धरि माए बा बहीन बह मोन पडए, उकरा बाद चरबेम
क्रम शोभऽ कागल।

नव देग, नव दुलह। नव चौरा, नव बीबी-बानी। नव देइधार, नव
रहइल। लागर जे कोनो दोसरे लगनार में आबि गेल छी। सधूरी काकाक
मुँहे सहरक कसेही गप सुनने रहिअइ मुए ई अन्दाज कहौ रहइ ? सहरक ई
सँचा तऽ सनोने हमर मोन नइ देखने रहए कहियो।

हुनने रहिअइ, सहरमे इइ रहिअहि आदनीक मोन बदलि जाई छइ।
अपना घर-मलिवार विगारि जाइ छइ अकरा। सुरा हमरा तऽ बीच बीच मे
अपन घर आइन वैश मोन पडए। आप मोन पडल, मोन पडए रेवनी। चित्त-
कवरी अकरी मोन पडए। बाड़ी मछक छुछ जिमनइ, ओकरा कानहर लतरल
बैरा, एकचारी पर लतरल चौराक लसी, लोझिया भिरचाइ छैर बुझा गाछ
कोखन कोखन आकन मे हुलकी देनिहारि बिजनी—एकएक कऽ सब मोन
रहए। आर जोर-जोर सँ हम सँघ धीचे लागी। खन बुझिया पोखरिपर
सुरता लाग खन डोङ्गके चउरी पर—अइ चउरीने हमरा आउर केसर
रुपाही सँ—अपना गामक बाप मोन मोन पडए; कलममे कऽ बुझा किमुन
भोग पर मकई नाइइ। खरकि मकई कऽ डोलवासी लोकाइ जे गाछ मोन
पडए। रोमाटा, सुग्गिया, छट्टा, नोन, कुंजा, घुट्टा, मकराहा सब बतारी
हरेपादि अबए।

कइ सब सँ मोन भरिआए तऽ लहरटौली बला सड़कक कातमे कनी काल
ठरा होइ। बजइत आइत लोक के देखिअइ। बाइमिकिल, मोटर आर
टनटन आर ठुन ठुन बजइत इश-रिक्का। ई सब देखिअइ तऽ गामक सुरता
नइ रहए।

काज बेसी महि रहइ छल। धर्तन रातिए कऽ नौजि राखी। चौका सेहो
रवके कएल रहए। भोरे कति कऽ चुलहीने आगि भरा दिअइ। दूध दऽ
जाइ से अकंठि ली। तहमे अइसन चढ़ा दिअइ। एक कात भातक आर एक
कात दालिक। भन सनी तरकारी लऽ आबो बजार सँ। न बजइत बजइत
भानक तइधार। लाहे न धरि मासिक छऽ लइथ। दालि-भात-तरकारी
चटनी, घी पापड़-अचार। दही दिन कऽ, राति कऽ दूध। दस बजे धरि ओ
कड़खोज नलि आइथ। हगछू नहाइ-सोनाइ, खाइ-पीपी, लउका बरतन करी।
बीक जहाँ दोबारा काढ़ि बहाड़ि दिअइ कोठरी आउरके। बारह बजइत
बजइत पुरमति भऽ जाए।

बारह सँ छे के तीन बजे धरि बेप टहलान मारी। कहियो कहियो
पोतघर दिस, कहियो सिकटिरिएट, कहियो लाहुर, कहियो टीसन,
कहियो अस्पताल दिस। कउखोज दिस कहियो नहि जाइ। मासिकक
लाज हुए। मना तऽ नइ केने छलइथ, तइओ टहलइत-बुलइत कास ओ कहल
देखि लइथ सँ लाजे कटुआ जाइ।

जहिया नइ बहराइ तहिया नकतक मलिकाइन-जोरे गप्प लड़ावी।
ओकर घरबसा भोरे जे दोकान जाइ से निसोडंड राति कऽ अबइ। ई
मछगी हमरा मासिको सँ हँसी ठहा करइन आर हमरो सँ करए। मासिको
के पान खिआवइन आर हमरो खुवावए। दू टा बरचा भऽ कऽ मरि गेल
रहइ, बाद मे किछु भेवे से केतइ। घर-आइमक ओगरदाहि लए बुझिया

मउसी की रखने रहए। ओकरा गोने तहरिवाले हम ओकरा भीकौ नहखत रहतिअइ। मकानवाली के ओ बेमारी भइ छइ जे बेमारी खवतिनिवा के रहइ। भपकड़ि पहर है अबस्ते रहए। गण केनिहार केशो भइ भेटइ त हमरे सँ संसोख करए।

नालिक दू गो पइसा हमरा रोज दइथ। ई पइसा हम जमा केने जाइ। कथि मे खर्च करितलै? सर-सरकारी आर दोसरा चीज-बस्त आना काल एतो-आप-गो पाइ बचिअ जाइ, बीछीक खर्चा ओही मे कति जाए।

पान खाएत बइकी एना मे कहएक बेर अपने मुँह देखी। सबकक कतबहि मे जतहि पानक लोकम ललहि एना लाइ। जहाँ एना देखाइ पड़ए की इन ठमकि रही। कोनो मे कोनो लथे ओइ अपन अररे देखि ली एना मे।

चारि बरइ की केन् सुइहाक आरती करै बेगी।

नालिक काइथो काइथो हतुवा अपने वनाबइथ। एक दिन बनबिसे काल अण्डा ओइके पीधरका रस ओइमे डारि देलखीन से हमरा बड़ कोनादन लागल। नालिक कहलइथ—गाम घर नाह भजिइथ।

से किये ?

फूलबाबू कहलइथ जे मुगीक अण्डा अपना ओनहर धामन नइ खाइए मुदा काएरा बड़ करइ छइ। अहरेजी पड़निहार इत्यंतक छहरदेवाली छरपि क कोलेजक अवनइ मे पाएर रहितहि अइ सबकथुक चर्चा बर्चा सुनइ लगइ छइ। तकरा बाद केओ-केओ हमरे जकाँ रोगाशगी बड़वइ लगइएदेखितहि छै.....

सुभाब बेजाए नइ बूझि पड़इ। ओना हम हुनकर टहलुआ रहिअइन; मुदा एतनइआक अनमना सेनो छलितइन। हिन्दी अहरेजी बजइत मुँह दुखाए लगैत त हमरासँ अपना भाखा मे आबइथ। कहइथ—अही लेल

हो तोरा अनजिअए, टहल-टिकोरा लेल तऽ अहुडान आदमी भेटिए जइतए। तोरा एक्के गण करइत रहइ छी तऽ बुझी पड़इए जे गानहि छी.....

बाप किरपन राखीन। माम लाहलखै। बापक दिस सँ खर्चा भितथे तँ भेटइन मुदा माइ तुकाकऽ खुइ देखीन। बुइए चारि दिन हम हुनकर भाम पर छल देखइन, बेनी तऽ पाह-पता नइ लागल, मुदा एतवा बुक्त मे शवि भेल जे लगानी-मिजानीक बड़ ओर छइन। जर-जवार मे दुखाप, सुगहर, चमार, खलवे, धुनिया, कुभरा आउरके छोटे-छोट टोल रहइ। उद-चनिहार आदथो काहि पेट बेचने पुरइए, लाहू दिन पेट बेचने धुरए। भूलक लेल कतरी अइठऽ लागइ तऽ बाबू भइथा सँ चारि पसेरी अपन भा की दूगो खपइथा सड़ैत गऽ। काज तऽ चला देखीन, मुदा पाछो आस्ते-आस्ते लोहू धीच लेधीन आर चमड़ी चिवाकऽ तिठ्ठी बना देखीन। चुपगू बाबू—अइसन नाम तइसन काम। फूलबाबूक बाबा कनइली रागक सलिलदार छथीन। भागलपुर सँ दच्छिन, बाँकादिस चाकरी करइत जिनगी मुख्त भेल रहइन। पमाकऽ टाले लगा देने रहथीन। चुपगू बाबू दर-दरसूदक बल तभीन जाल छव बड़ा नेने रहइथ। धनीक खाई हिन्दू रहओ, खाई मीना, खाई अहरेज रहओ, खाई जपानी—तब एओ जातिक होइए। गरिवहीके हगर जनइत एक्के गो जाति होइ छरे। चुपगू बाबूक भितरिमा नारिखे राइ ठा नहि, आनगो कईएक पर तवाइ भऽ गेइ रहए। थेटा के पड़वइ छलइथ जे जे भजिअर देखीन।

मुदा अपने इच्छे तऽ सब किछु होइ नहि छलइ। बापक जे मोन रहइन तही मोताधिक फूलबाबू तइथार होइथीन तखन की छलइन ?

फूलबाबू भितरे भितरे पछरेगिया भेल जाइथ छलइथ खूब एखबार पड़इथ। लोहर आउर के लेकबर खूग सुनइथ। बरका बरका लोहर सज्जनमा

मिलिफदार हुए आर नाका केनिह केनिह के कहल जाय । नाका महाभाषा
होइ हुकुम चलन । बाकी पुरखला बड़की मैदानमे कहियो कहियो भारी
मिटिन होइ । पूरुवाधू नरोवरि मिटिनमे जायि । एक बाध बेर हमहु देख
नेल होय । आत किछ नइ बुझिअई, ओते रात लोक के अभा देखिक
अवशुन लागय ।

ओह वमेच छोड़िबं मालिक लखल बुला पहर करलछीम । धोती,
तकमी, दड़कीछा, चलेय, मोड़ आक कोल..... सब खइइ । मोल नहीमे से
बेरागर भेट करे अवध न ताहुमे आब देखे लोकके देखी देखिअइ ।

बेरा-पीयाक देही दड़वालि चेलइत । माछ-मोड़ आर अम्ब छोड़ि
देखैथ । हमरा मालिकक ई रचताक देख के दुख हुए । किछु कहयन के
हिममति नई । अइ लोक से फगुआ बितइइइथ ।

करतक पड़थ आर अछअइनी । मालिक बेर डीर पाठि रेलइत । ई
देखि के हमरा कीह कारए । हुनका लठ बाधक चिट्ठी नरोवरि अवइत,
मुदा हमरा नहि आबइ माइकेर हालतमखार । गामका लोक आना तऽने
हुइओ पतिथानी सिलइ, अहन ओकी राजा-बैर हेतइ तइछे मोन पाइत ।

चारि मासक दरमहा पठा देने छलिअइ, भाठ गो बगइवा । बाली
बिनके बाइ तकुर रहीह ऐल । ओठा-निमान हमर माइएके रहइ बूझ ओइत,
गवाही मे के दसखत केमे रहइ से नइ झुकलिये ।

बैतमे दू राति मालिक बाया पर नइ एलइथ ।

बुछला गर बमला—पीयासे तटाकत अतिरम हइ ओकहिरहि गेलिअइ ।
हीतहीत लोकनि नहि मानलइत ।

बड़का कठजेत सब मे प्रयाइ कम होइ छइ, छुटी बेसी । बरख भरिमे
पांचो मास पूजल रहइ छइ की भलि, से कहनाइ मोलजिल । फूलवावू

अन दूनु काज सभारइथ—गढ़की करदथ आर कछरेसी करदथ ।

गरनीक छुडी शवाल रहइ । चारिए छ दिन बांकी छल हेतइ । मालिक
मोरे सदाकल बासरम शिशइथ कहले रहइथ—सौभुक पहर सुरबइ, एखन
हमरासेव भासत जुनि करिहए ।

खिचइ आर आलुक लाना बनइलई अपना कह । खेलई आर दहलि
बलि बड बेर चितइलई ।

सँभावन तकासे बुझाई बरा देखिअइ । बड़ मोरसँ भुनिगा आलुक
बरकारी कौली, टमाटरके मिठका चटनी बनौली । हीलसँ दालि खीरकी ।
हीन चपिशान खिआक दूध अँछली, अचार नइ रहइ, त मकानवाली सँ
मिमकी बनली ।

आहि रै वा ! बारह टोकजकइ चुरा फूल बाबू कहाँ एकइथ । बुरि धुरि
बड हम सड़कत काज मे आबि ठरा होइ । पच्छिमसँ के कोनो रिक्का अवइ
करा गहिनी नजरिसँ देखी, बड़ अनदेखा हुये । हुये के की भेलइत मालिक के !
बाट तकरत-तकरत किमइ टहकइ जामल तऽ कोठरी मे आबि बंड पड़ि
रइलई । के खाइए के पिअइए !

कखन कोना पपनी हुन गेल आ नाइ बाज लागल से नइ बुझिअइ ।

ओर मे महेन बाबू आबि कहइथ—“मालिक त मोहर गिलफदार भऽ
गेलथुन, माला पहिरि कऽ बहल गेल छथुन । एखगर कधीए बाया ओगरसँ
चल, ता बड़ हमरा ओतइ रह गऽ । चीज-बउत अपनकोठरी मे बन्द रहइत ।”

महेनबाबू एते बात इक्के बेर बाजि गेलइथ आर कुरती पर बडठिकऽ
तिकरेट पिअ लागइथ ।

हमरा ई सब सुनिअऽ अकबक किछी नइ पुराइ ।

लोछइ-उजइ बरखक अवस्था छल होत । महेन बाबू के हमर हाकिम देखि

कस कनोट मेल देखेन । मालिकक भिलपदारी तऽ ओ तऽ नहि कहितइ
आवि कऽ तऽ कोना बुझितइ ? एखनार देखनार बन्धे मऽ लेल रहइ आ
हमरा तऽ पढ़े नइ आवइ, आरी अक्षर नहि रहइ हमरा लेखे । तहन बात
बात नइ बुझने रहितइ तऽ बु-चारि दिन अक्ससे बहतइतरे ।

बहीकालधरि सुम्न रहलबं । तहन अहलिअइन—सरकार, दरिमान-
मधवनी दिन केओ गेनिहार हीए बार अहोकि चिन्हार रहइ तऽ ओकरे एक
हमरा देत पठा दिअ ... अइ ठम अगरे हम कोना रहब ।

अइपर ओ हलइय आर बाजला—धुर वतहा ! तोरा लेखे जेहे
फूलवाबू तेहने महेनबाबू । हमरो आउर चरेगे रहइ छिअइ, बोन मे वहाँ
रहइ छिअइ । मात दु नात मे मासिक कहल ये करदे करघुन, तो अमेरे
अगुलाइ छऽ ।

महेन बाबूक ई बिचार-चिन्ता नाहि तौत बुकना मेल । इन सीचली के
बाबू लोकनि वडा नतकरी होइ छथि । दिनक नोकर-चाकर भागि मेल
हेतेन तँ हमरा पर एतेक जोर दए रहल छथि, नहि तऽ मंगली से ककरा के
अन्न-धानि देत छैक । तइयो दिनका छोड़िआम दए दिन रहि देखवाक
चाही । एना एमगर गाँव जायब तऽ मलिकाइन छोड़ि छोड़ि कए राइत
हाल जानि लेतीह । ई सब बात जखन फूल बाबूक माए-बाप बुझथिन तऽ
हुनका लोकनिक मोन हरबडा जेतनि । मालिकक माए तऽ अन्न-धानि छोड़ि
कए चाम देवापर बतार भए जयथिनह । ई सब ब्रह्मचर हमरे माथ पर पड़त
बाए रे ! ई तऽ भऽ नहि लखैत अछि ।

मोने मोन हम निश्चय कहलहुँ जायब फूलबाबू जेल तँ छुटि कए नहि
बोताह, ताबत तक हम नाम नहि आएब । महेन बाबू ओके कहैत छथि, जेहेने
महेन बाबू, तेहने फूल बाबू । बाजब-भूकब, रहनहि तइगहि रंग-डंग सब रहे

छैह । कहनार कडिन छल जे दूनु से के एतए देसाह आ के बीच । तऽ बुझ-
लह हो भाई ! अहरी-अहरी वसु-जात ठीक कैलहुँ आ बंगला-खिड़की बढिया
जहाँ बन्द कऽ देखियैक । अपन कपडा-बिछोना, सिलेट-पिनसिल निकालि
तऽ बाहर राखल । मकान मे ताला ठीक महेन बाबूक संग चलि अएलहुँ ।

महेन बाबू वडा खुशी भेलाह । धरक बिषय मे बहुत बात ओ बोटे मे
हमरा तँ पूछि लेने छलाह । बाए नरि जेल । दाइ (आशी) गरि जेल । माए
आ छोटा बहिन अछि । दू-तीन वरख तक महीसक चरौनी कैलहुँ । ई सब
आत महेन बाबू हमरा तँ बूझि लेने छलाह ।

शहरक बाहर खोडीपुर मैदानक लग एक बड़काटा बंगली लाल रंग मे
रंगल छलैक । ओ भीमे हमरा भीतर लऽ भेलाह । हमर मलिकाइनक समिर
में कनी नगहर महेन बाबूक माए पीढ़ी पर बैठल तिल मे सँ कंकड़ी बिछैत
रहथीय । महेनबाबू हमर कान्ह एकदि माए, के कइलजिन—माए, ई फूल-
बाबूक नोकर छैन्ह । माँजी हमरा एही सँ शिला धरि देखि बगलीह—फूल
बाबूके ई कि सनक अखबार मऽ भेलैन ? माँजीजी नीक वरक भेना सबके
हिगारवाक ठीका लए लेलैनह अछि कि ? पढ़-लिखब छोड़ि कालेजक
बिद्यार्थी सब आब नूने बनौते कि ?

एते वाजि ओ दए नगवानक दित हाथ छडा कए बजतीह—दे दीना-
बाथ ! आहाँ एहि भेना लोकनि के बुझि दियोन ।

नगहर मकान रहैक । बड़का-बड़का धारहेक कोठली छलैक । आँगन मे
लताम, हरतिगार आ मेथोक भात छलैक । हम ओही म्हाइ सभक दिस
बहर-बकर लकैत छलहुँ कि माँजी भनौतिया के सीरपारि कए कहलखिन—
मावाजी, फूलबाबूक नोकर आएल छैन्ह एतरो मानम देखैक ।

हमरा महेन बाबू लऽकऽ अपना कोठली मे अएला । अपन कोठ उबारि

खुट्टी पर टॉपि देखलिन। कुतूँह वैगलाह आ हथारा सँ हमरी घेतए कहलनि। हम नीचा पलस्तर पर गेल गेलहुँ। फीरली बहिषा आ नमहर छलैक साफ मुखरा। एक पलंग, कुर्सी, टेबुल, कितनय सँ भरल रैक आ कपड़ा टॉपि वला खुट्टी। पलंग पर चनवा जकों ऊपर टॉगल गुलहरी, पैर पोछक पापीण। ई सब बड़ बहियाँ लागल।

महेन बाबू बंगाली छलाह। हमरें मालिकक संग पढ़ैत रहथि। हुनुगोटा मे बड़गाढ़ देखी छलैन। मालिक के घर सँ चूडा, ची, अचार, सब खाएल रहथि। ताहि मे सँ आधा महेन बाबूक घर पठा देने रहथिन। महेन बाबूक माए-बाप सब हमरा मालिक के चीन्हैत छलथिन। ओ लोकनि पूलवायू के अपने भेदा जकों हुकैत छलथिन।

बंगाली लोकनिक बलिबार बड़ भरलदूरत रहैत छैक। हुनका लोकनिक घर-गृहस्थी, खेनाई-पिनाई, ओढ़व-पड़िख, गध डेशवाली (बंगाल सँ वरिष्म) लोकनि सँ भिन्न। महेन बाबू आठ भाई-बहिन छलाह। एकर अतिरिक्त घर मे नाए-बाप, विश्वा नीली, धू भोकर आ एक भनमिया, जकरा सब बाबाजी कहि कऽ लोर चारैत छलैक। एक बड़का इस्टेट छलैक हो भाई। महेन बाबूक पिता सिकटेरियट मे अकसर रहथिन। आठ लीं रुपैया महीना प्यैत छलथिन। बारह सालक पुरान नोकरी छलैन। बंगलाक पाछू मे करीब दू बीघा जाली जमीन भेटल छलैन। आगा हरिहर पापक फाटल-छाँटल छोट-छिन मैदान-मीमक दू टा झुनेत झमेल छथान गाढ़। कायफ छोट टा फाटक। साहेबक नाँव पट्टी पर लिखल रहैन। हत्ता में हुकूम सँ पहिने ओख पट्टी पा तोहर ओखि पड़ि जेतह।

हुनका ओहिठाम चारि दिन रहिकए हमरा मोन के बड़ खंतोप भेल। महेन बाबू हमरा लगम चाकर बना कए रखने छलाह। बेजो विरोध रहि

कैलक। नोकर के ओ भना कऽ देने छलथिन—आइस हमरा कौठली मे बल-चनमा छाड़ू देल। हमर चाय आइस बलचनमे बड़ टेबुल पर आनिकऽ राखल। हमरा धोती केँ बलचनमे चुनिआयत। कहवाक तारपप ई थिक जे सिनेस मे महेन बाबू हमरा तराचोर कऽ देखनि। सुदा हो भाई सब, एतेक जल्दी भला हम अपन भूकवायू केँ कोना बिलरि जेतहुँ।

पूख बाबू बड़ा मोन पड़ेत छलाह। एतगर मे कतेक बेर करेल फाटल, कतेक बेर ओखि भरि आएल—से कहि नहि सकैत छीथ। ताइ दिन गांधीजीक बड़ जोर छलैन। थड़-पकड़ जारी छलैक। सरकार बड़ादुर दिस सँ कानून छलैक जे दून तब नहि बना सकैत अछि। गांधी महतमा सरकार केँ मुक्तयऽ जाइत रहथिन। अँगरेजी सरकार अपना जिव पर बड़ल छलैक। कलकत्ता इन्वईक सेठ साहूकार लोकनि सेहो भीतरे-भीतर गाँधीजीक पन्थ लैत रहथिन। हुनका लोकनि केँ साफ-साफ देखऽ मे अपैल छलैन जे तोराज भेला पर सबसँ अधिक गप्पा हुनकेँ लोकनि केँ हेटेनि। सरकारक मुक्तता सँ तोराज आ सोराज भेला सँ बेसी सँ बेसी कल-करखाना फोड़पाक व्यवसाय, सब हुनका लोकनि केँ स्पष्ट देखाइत छलैन। अखन जे पैस के हूहि कऽ अछरेज लऽ जाइत अछि से तोराज भेला पर सब हमरे खजाना मे आवऽ लागत...सन दीव-बत्तीक जमाना रहैक। गाँधीजीक हुकूम सँ बाबू लोकनि गिरफ्तार भए रहल छलाह। हमरा पूल बाबू के सेहो गाँधी महतमाक हवा लागल रहैन। सुदा हमरा वृकऽ मे नहि अबैत छल जे कियाक लोक पैकार बापना के पकड़वैत अछि। मे मारि-पीट, मे चारि-चारि आसे डगड़ा-भंकट। फेर किदा पुलिस ककरो पकड़ि कऽ कऽ जाइत छैक। सरकार बागल मे कऽ भऽ गेलैग। हम एक दिन महेन बाबू सँ पुछबो कैलियनि आ उत्तर मे ओ बहुत बात कहलनि जेदा हो भाइ हमरा वृकऽ मे किछु नहि आएल। बेर-बेर बलचनमा

हम इसाई सोचें। छी के बाबू के अखन जइसे जयवाक छलैन तखन हमरी मेमे अइतथि । ई जे दस-दस, पौन-पौन आदमी हुता, धोती, टोपी पहिर कइ गरा सै नाला पहिरने भइलआ खली जकाँ गून बनावऽ जाइत रहथि तऽ हमरा ई बाबू लोकनिक एकटा खेले बुझबा आए । अहुना कहिनो ककरो चोराज भेटलैवा ।

अधिक काल तक गून-गून रहवाक लखसऽ । हमरा मईन बाबूक ओठ कहिनो नहि भेटल । हमरा ठगिरक कथा सँ हुनकर घर भरल रहैन अगमा भाए-बहिन से नमहर मईने बाबू छला, भाए-देवर आ चारिम पहिन छलिर से हमर एतेक टा रहैन, चारिटा छोट-छोट । ओ कहिओ हमरा उधार नहि रहए दैलनि । बड़ा बाबू आ अम्माजी सेहो हमरा पर नजरि रखैत रहथि । पन्द्रह पन्द्रह दिन पर हजाम अवे आ बन्धा तबके केश काटि जाइ । सनि दिन कऽ थोल कपड़ाक मोटरी तऽ कऽ धोत्री अवेक । सोनन से दू एक टुकड़ी माछ नित दिन अवश्य भेटि जाए । हम नहि चाहैत रही कि चाय पीबाक लखि पड़ए मुदा मईन बाबू हमरा जबरदस्ती पिअवैत छलाह ।

बार हमर काजे की रहए ? मईन बाबूक थोड़ बहुत सेवा रहल आ साँझ कऽ छोटका खोखा बाबू के खरक पहिया बला छोटिका गाड़ी से हुन लेनाई । बड़ा सोन छल । भरि पेट खेनाई आ तामि कऽ सुतनाई । हम ओ छोटकी मलिकाइन आ एहि अम्माजीक बीच अकास-पतालक अन्तर । एतए हमरा केओ कहियो गारि नहि ऐलक । केओ कुचा सुअर नहि कहलक । केओ कान नहि खंडलक । उनटे एतए मईन बाबूक छोटकी बहिन सन तंगर आ कनेरक भुमका सँ हमरा कानक साज लगाए करए । एक बार कहिस, कहवहक तऽ नइ कहरो ? नइ कहवहक तऽ कहवऽ । अन्धता तऽ सुनह । हमरा सँ साक्ष कुछ मातक छोट छल । अनीता नाँव छले ओकर ।

मईन बाबूक छोटकी बहिन एक बहिन आ दू भाई ओकरा सँ नमहर रहै । पिण्डइयाम गोल चेहरा, बड़का-बड़का आँखि, चाकर कपार, पातर-पातर ठोरवाली छोट-छिन माछगि ब्रह्म ओ । माछगान पिछावक ईह हुनका ओहि-ठाम मास्टर अवैत छलखिन । गढ़ावक ईह तऽ फराके मास्टर रहवे करैक ।

बंगाली लोकनि वड़ा ओजी होइत छथि । खाली खैर-पीर, गढ़व-लीखव आ रुपै पैसा नहि, नाच-गान आ राग-रंग सेहो चाही हुनका लोकनि कें । कीक ने छइ हो भाई केओ अगर ठेकान सँ जिनगी बितावे तऽ कि हर्ज ? तऽ हो भाई, ओ अनीता खूब अढ़िया नचै । गला सेहो ओकर बड़ मोठ रहै आ हमरा तऽ खूबे माने । किछु दिन तक तऽ हम ओकरा सँ दूर भगैत रहलहुँ । मुदा देखल जे केचारी चोराकऽ हमरा लेल बिरहुट आ चौकलेट लवैत अछि । एक छोट-छिन ककवा आ एक ऐना कतौ सँ आनि कए ओ हमरा ऐलक आ चलहन तऽ कऽ कहलक दादाक (मईन बाबू) सँ रहैत छै । अहि ठाम एतेकदा ऐसा राखल छैक । कहियो-कहियो ओहि से अपन चेहरा तऽ देखि लेक कर ।

कियो, कि अछि हमरा चेहरा मे ? हम जे ई पुछलिये तऽ अनीता हमरा दहिना गाल मे एक धप्पड़ मारि कहलक—रहती की ? तोहर केश बहुत बढ़िया छोक । सोन सन केश तब के नहि होइत छैक । एहि केश में ककवा धरर शिरबाक चाही । कनीकाल बाद कैर बागल—हम राधा बनव आ तौ क्षण बनिकऽ हमरा सँगे नचबे ?

लोक देखत तऽ की कहत ?—हम ओकरा दित देखि कए कहलियेक ।

हमरा कान मे ओ कुतजुरा कऽ कहलक—दुपहर मे कहाँ केओ रहैत छैक ? आ नाच करे ते मुहल नहि पहिरव । ते सुनुर सुनुरक आवाज हेतै आ ने केओ बुझवै—। एकरा बाद अपन दू हाथ हमरा कन्हा पर राखि मधुर

हस्तियाँ अपनी-तन हमरा सँ हैं करी लेलक आ ओहि दिन तऽ नई दुखी ओकरा
सीत दिन बाद जयसर सेठ आ हमरा लोकनि खूब मजबूत। नाउस बजाव
तऽ हमरा अवैत नहि थोड़, तखन अपनी-तन हठ छलीक से हो भाई इन
ओकर वान राखि देखियैक।

फूल बाबू फादुन मे छुटि अछल। महेन बाबू कुलवाडीशरीरक केम
जेल मे जाकऽ हुनका तँ मेट कऽ आएल रहथिन। हमरो कुशल-खेन कहि
आएल रहथिन। छुटिसे ओ मोभी महेन बाबूक घर पर पहुँचलाह।

अपना मालिक के देखिसे हमर भीन भीन गेल। ओ डाढ़ी उठाकर
हमरा ओलि मे देखल लगलाह आ पुछलनि—केना रहै छले ई बलचनमा ?
हमर ओलि भरि आएल। कहि नहि सकैत छी जे हमरा खुशीक नोर छल
अथवा पहिचाना विधोकर।

फेर ओ अम्मा जीक हम नहि गेलाह। महेन बाबू अपन मालिक
नगेर रेल रहथि। ओही दिन तँहि कऽ मालिक अपना डेरा मे खलि
अएलाह। हम देखल जे मालिक बहुत बदलि गेल छथि। तँहि-प्रातः मालिक
भजन गवैत छलाह। जेहे सँ गोसाइ एक छोटी पोथी लए आएल छलाह।
किछु दिन बाद बच्चा मे रहए वला एक चरखा खरीद लएलाह। खेन-पिन
सेही हुनकर बदलि गेल छलेन। मगला मिरचाई किछु ने। सरकारी छडी
कऽ खाइत छलाह। एक दिन देखल जे कटोरी मे गहुँन भीज देलखिन।
हम तऽ दुष्ट नहि मजलियै जे एकर कि हेतैक। दोसर दिन आनि कऽ
गहुँन के भीजल अंगणेछापर पगारि देलखिन। मातःकाल गहुँनक धाना जखन
अँकुरा गेलैक तऽ फूलबाबू एक-एकटा कऽ खएलनि। कहियो उसमस
आलू, पिलाव आ पुडे पर रहि जाइत छलाह। हमरा तऽ हो भाई
अन्देशा भऽ गेल जे बाबूक भिताजे समझि गेलैन अछि।

बालिन सँ नौच कहि गेल रहैन। गाँव-वर जेहवाक तऽ नहि मुदा दरमंग
जाए कमेसक काल करवाक विचार करए लगलाह। महेन बाबू बीच-बीच
मे आवथि आ दुनू मे धेर-धेर तक मग्न होइन। हम छल्ल जकाँ हुनका
लोकनिक बात सुनी। अपन मालिक या महेन बाबूक कृपा सँ बक्षर मे मात्रा
लगेनाइ आन हम तीख रेल रही। कऽ ठऽ कऽ बच्चाक पहिल पोथी हम
पहए लागल रही।

फूल बाबूक मोम पढ़ाई सँ छलरि गेल रहैन। माए चापक डर आन
हुनका नहि छलैन। ओ महेन बाबू सँ एक दिन साफ-लाफ कहलखिन—हो
भाई, हमरा सँ ई सब नहि हेतै। घरक लोक सब हमरा बलील वनवध
चाहैत छथि। बगलत मे बात-बात मे मूड बाजए पड़ैत छैक। आव कोनो
शेखर-नोकर नोकरा सेहो हमरा सँ नहि हेतै। एतेक जमीन अछि जे हमर माए
बाप भूख नहि मरलाह। अम्मा अपना देखक सेवा करए दऽ। तौ बलिस्टर
वनवध, पिलावत जेवह। तौहर रस्ता दोसर छह आ हमर दोसर।

बहिला दू मास मे हमरा माए के नाँव पाँच-पाँच यैयाक ननिआडर
पठेने छलखिन। जेल सँ अएलाह तऽ पाँच यैया फेर पठा देलखिन।

एकदिन गोरे छति हमरा सँ ओ कहए लगलाह—बलचनमा, महेन ओहि-
ठाम नौकरी करबै। हम तऽ पढ़ाई आन छोड़ि देल। दरमंगा सबस्तीपुर,
मपुवनी, मुजफ्फरपुर, पटना जतए कथिन पढ़ावैत ओतइ रहि कऽ काज
करब। आव हमरा नोकर नई चाही। गाँधीक हुकुम छनि जे अपन नदी
सेहो अपने लाक करए। अपन कपड़ा अपने साफ करए। अपन मोजन
इधरे दगावे।

हम गहिने तँ बुझैत रही। कनीकालक बाद हम कहलियैन—चारि-पाँच
मास भए गेल। माए महेन पड़ैत अछि। घर जाए चाहैत छी। माए के
विचार हेतैक तऽ फेर पटना आयब। अइ पर ओ बजलाह—तऽ चल
इधरिका तक सँभ। ओही दिन रातिक अहाज सँ हमरा लोकनि देशक
(गाँव) दिन विदा भेलहुँ।

हमर छोटकी बहिन रेवनी चौदहम बिता कऽ पन्द्रहम से पैर राखि चुकल छल। देहरा-मोहरा खुलि जाइत रहै। जवान भऽ रहल छलै। दुरागमनक मेह नै देत छै। हमरा समाज मे विवाह पर ओते ध्यान नहि देल जाइत छैक अनेक दुरागमन पर।

हमर भोज रहए जे रेवनीक दुरागमन भऽ जाइक। मुदा हमर माए नहि चाहैत रहैक। ओकर बिचार छलैक जे रेवनी बखन सेना अछि। दूसरी बरल आरो नइहर मे खेलि-खा किए, फेर तऽ जिनगी भरि गिरहस्तीक पहाड़ माथ पर डोबाक छैह।

माए जे एना सोचे सकर एक दोसरी कारण रहै। बात ई रहै जे हमरा लोकनि बोहि छोट परिवार मे सब मिलाकऽ तीनए गोठे रही। सब दऽ कऽ हम, रेवनी आ माए। हम मात मात पर देश मे रहि आएल रही। रेवनीए रहै जकरा छाती लगाबए माए सुतेत रहै। रेवनीक दुरागमनक बाद माए एसपरि गऽ जाइत। हमर रहनाई आ ने रहनाई एके रंग कारण माएक देख-रेख, हिफाजत, खबर निरि आ परपरिश तऽ हम कऽ सकैत छलिये मुदा रेवनी जकाँ ओकर तहेलीक अनाथ इहेमाइ हमरा बूझाक बाहर छलै।

हमरा एतेवे चिन्ता रहै जे अभीन्दारक गाँव छैक। ई लोकनि लुच्चा होइत छथि। असल-तहसीलक काज चुम्बल बराहिलक माथ, धर गिरहस्तीक

बलचनमा

देख भाब छोड़ भाईपर सेवा टहलक काज बहिया खवासक मार, शेष बचलाइ बेटा नाती, भाई-भातीज, आ गार-सरबेटा से पैसल बैसल ताश पीटता, शतरंज खेलता, शहर जाऽ कऽ सिनेमा देखि बौताइ, बेकार भोज शेजानक घर। खेद गिन आ आरामक कमिण नहि, काज कोनो करताइ नहि ककरो बेटी समान भेलो नइ कि निशानऽ लगाबए लगैत छथि। ई नई कि बहिन-बेटी समक एके रंग होइत छैक। अपन इच्छत आवर जे हमारे तऽ दोसरी के नीक होएत छैक। मुदा हो माई। जिनका लोकनि कें धन होइत छनिह से निपट आन्हर होइत छथि। अपन आन किछु नहि छुम्त छनिह।

आ हम तऽ गरीब ठहरकहुँ। हमरा लोकनिक सय आर होइते कि अछि। समाए-खटऽ लेल ई पूनू हाथ, माए बहिन-बेटीक इच्छत आवर, मेह ने हमरा लोकनिक धन अछि। तोहो कहऽ हमरा लोकनि एकरो रक्षा नहि करी तऽ ई जिनगी कोन काजक।

हमर गाँव अभीन्दारक गाँव छल। बड़का घरक कि जवान आ कि बूढ़ समक अछि पाण मे डूबल रहैत छैक। दुरागमनक बाद केवो नबकनिया ककरी पर अये तऽ एहि लुच्चा लोकनिक अछि ओकरा घोक चालकात नचैत रहैत छै। जाबत तक बाप-पोन दृष्टि सँ देखि ने लेताइ ताबत एहि प्रमाणा लोकनि के राति मे निन नहि होत। कतेक बेरतऽ एहम भऽ जाइत छैक जे ककरा देखए लेल बाप हरान सकरे लेल बेटा परेशान। ताइदिन गालिक समक राज रहैत। हमका लोकनिक छिलाक सौ अपन छोटकी बंधुर ने छटा तकितह। ककरो इच्छत आवर के बेदाम रहए देब हमका लोकनि के सख नहि छलैत।

हम नई चाहैत छलहुँ जे हमरा बहिनक शरीर पर ओहि लुच्चा लोकनिक हाथ पड़े। हम नइ चाहैत रही जे हमर माए अपन बेटीक आमदनीक साधन

बलचनमा

बनावे। गरीबी नरक छूट हो भाई! नरक आबरक चारि दासा छोटका बहेलिया जेना इहिया के फसबल छैक ओहिना ई धनधान गरबू लोकनि स्वीयक के फसा लेत छथि। हुनका लोकनि के पास धनो होइत छैन आ इहियो। हुनका लोकनिक शीला अवरमपर धोक। तमहर खनदानक अवारा सँ अवारा लोक पण्डित आ पुरोहित सँ मलमनगोहसक पदवी पाबि जाइत छथि।

ते हो भाई! हम चाहैत रही जे रेवनी आव अवना परद के संग रहे। बाबू लोकनिक एहि वस्ती मे अपना बहिन के रहनाइ हमरा पत्नीन नहि छल। छोटका मालिक आ मजिना-मालिक आ दोहर पट्टीक बाबू व्यवधान करी पर हमरा भरोसा नहि छल। आ आव तऽ हम पटना देखि आएल रही। महेन बाबू कि राजा नहि छलाह? हुनका ओहि ठाम कि सुन्दर स्त्री-पुरुषक कमी छलैन? ओहन जगह पर रेवनी के चारि-छह मास रहि जायब हमरा नहि जायइत। महेन बाबूक घरक लोक रूप नीक नजरि छलाह। सुवा एहिठाम महेन बाबूक बलिहार हमरा कोन काज अवेत। एतऽ छोटका आ मजिना मालिक रहथि। मलिकानक बेह पट्टी रहैन। होरा बाबू, बुचकन बाबू, गानिकजी, बचोतबाबू, लालबाहेब—मालिकक टाका भरि साहबजाये रहथि। एक भऽ एक शैतान। एक सँ एक मजदू। इतऽ भऽ नहि सकैत छलै जे हमरा बहिन पर हुनका लोकनिक नजरि नहि रहल होनि।

हमर माए ई बात नहि बुझे, ओकरा मालिक सब पर वड भरोष छलै। समझैला सँ ओ एतवे कहइ, पामि से रहि कऽ सोहि सऽ कगड़ा? जिनका लोकनिक ऐँठ खाकऽ तँ एतेकटा भेजेह हुनके लोकनिक विषय मे एहन-एहन बात सोचैत छै? अवरम इहो रे बलबलमा, अवरम। भगवान विमर्दि जेथुन। राहर जाकऽ दयाह विद्या लीख प्लेसहऽ। सोहर बाबा-आजा तऽ सेहो हिनके

बलबलमा

लोकनिक ऐँठ खाकऽ फेरन-फारन पहिर वऽ जिनकी चिता बेलखुन, एहन बड़वा तऽ धन बेरा।

हमर माए अहिना सोचैक। छोट जातिक दोहर स्वीयक सेहो मालिक लोकनिक विषय मे एहने किछु चिन्तार रहैक। खसल अवस्थो मे तऽ ओ लोकनि मालिके छलाह। मालिक लोकनि राजा होइत छथि वा राजा भेलाह भगवानक अवतार। हुनका लोकनिक खिलाफ के किछु सोचि सकैत छल।

सुवा गवति हमरा बुझैवाक फल ई भेल जे माए किछु सोचवाक हेतु मनेवर भेल। ओ राजी भांगेल जे रेवनीक दुराग्रमन कऽ देल जाइ।

बैशाखक मास रहैक। थोड़ साख जाम नहि फल रहैक। आव हमरा पूरा अनोरी भेटऽ लागल। कन्धा जोख मे पूरे चारि सेर धान हमरा अनोरी मे जाहि दिन माए के भेटलैक ताइयिन ओ आनन्दक धार मे बडि गेल। एहि इहिया मिखमगी के ओही खुशी मे ओ आधा सेर धान वऽ देलकैक। ओइ राति बखन हम खाए बैगलहुं तऽ बडा निनेह सँ माए हमरा खाँ छीकऽ लागल। ओकरा नजरि ने हो भाई आब हम पूर्ण बादमी भऽ गेल छलहुं। छलहुं से?

हमरा ओइठाम छोटका जाइत मे मज्झाक वड आदर छैक। लहियो-कहियो कोनि मे धानक बदला लोक मज्झा के पत्नीन करैत छैक। असु गरीब के के धोर बहुत उपरारि जमीन होइत छैक ओइमे ओ मज्झा रोपनाइ पत्नीन करैत अछि। बैशाख मे शानि पटा-पटाकऽ मज्झाक बीजा बोवा होयार इल जाइत छैक। ओकरा नितधिन पाइन चाही, बीत-बेद बीतक भऽ गेला पर मज्झाक बीजा खलाइ लेल जाइत छैक। फेर ओकरा जोतत आ सुरभुरी मटिबला भीजल खेत मे रोपल जाइत छैक। मज्झाक श्याम-सलोना डॉट-पाव सँ लहलहाइत खेत तँ कहीं देखने छल। नहि देखने छल तऽ देखि अचिहऽ

एलचनमा



येथा सोन हरिअर भऽ जइतइ ॥ धानक हरिअर डोटक अपन कराके सोभा छइ तऽ सँवलिग्या बिहारी महुआलाल के अपन कराक ।

घरक बाबू मे हमरा थोरैक जमीन रहइ । अइयेर हम अपने मालिकक पोखरि सँ बैल मरि-मरि कऽ बघली । हमर बाबू सेहो अठिना पानि मरि-मरि कऽ महुआ-पटवैत रहथि । सीक पटइ सँ पानि भरपाक अवसर अइ सँ पहिने हमरा कहियो नइ भेटल छल, तइयो जाहि ओश आ-उमंग क ओइ बेर महुआक सेती हम कएली से देखिकऽ लोक तइयंग रहि गेल । एनहर कनेक थकावट बुझाएल तऽ बीड़ी टानि लेलहु । बीड़ी पीवाक इ हिलक पटना मे लागल रह । थकला पर बीड़ीक एकाध दम बर नौक छो छइ हो भाइ ! आ फेर हमर सऽ इ हाल अछि जे इ दन खिलखी कि कैर मिश्रा बैल आ ओइ अघजर बीड़ी के कामपर खीसि लेलहु । तीन बेर से इन एक बीड़ी खतम करैत छलहु ।

ओ हमर उपभ्रातृ नहिल कएल छल । छेद कइा खेत मे द पसेरी महुआ भेल छल । अपन मेहनतिक फल केहन भीठ होइत छइ । अपन उप-जाइल महुआक रोटी सँ भेट तोहर भलेही मरि जाव, हिबाव नहि भरतइ तोहर, ई !

महुआक बाद धान रोपवाक दिन अएलै । मालिकक खेत मे दिन भरि हम धान रोपैत रही आ घरक तब काज माए आ रेंवनी धरहारे । थाकल-मोएल मेहनति सँ चूर-चूर जखन सौंछ कऽ हम घर आवी तऽ घर मे भोजन तैयार पावौ, हुपहरक भोजन मालिकक बिस सँ खेत मे पहुँचि जाइत छल—दालि, भात आ अचार । धनरोपनीक दिन से ई लोकनि खेतक जनके भोजनी करा देत छलथीन । अइमे दया-मवाक कोनो बात नहि, हुनका लोकनि अपन खारथ जाव करै छैन । अपन-अपन खेत पहिने तैयार करा लेबत

फिकिर पड़ल रहैत छैन । दूर दूर तँ जन बजाओल जाइत छैन । सबके बज्जा-दादा, कका कहल जाइत छैक । युवा, राधा आ मुन्नाक बोली बैल जाइत छैक । पूर सोनि आ एक बेरक भरि पैठ लेनाई दऽ कऽ सब अपन-अपन खेती करैत छथि । ओइताल पड़ल बेर हम पूरा भोनि पर धनरोपनीक काज कएने रही । छोटकी मलिकाइनक किछु दिनकलेल नैहर बैल रहथि । नौकरी छोड़ि कऽ मालिक घर बैसल रहथि । खेतीक काज मलिकाइनक भाई-देखैत रहथीन । मालिक बाबू बित्त मरि किताब आ हरमुनिपत्र मे डूबल रहथि ।

माए हुनका ओइठान परक काल पहिने बकाँ अखसो करैत रहै—वासन धोनाई, पानि भरनाई, काहु-बारहनि पैनाई, नीपब-नीतथ, सुरहा जरा कऽ भानव चढ़ा पैताई इबाइ मत्र काज छलैक । काज पैती नइ, मुदा लपटोनी बढ छलै । लपटोनी माने इज्जतक हो भाइ ! नइ बुझने हेबइक । हो भाई एक होइ छइ काज लेनाई—चटसँ कहलहुँ आ पट सँ काग भऽ भेलैक । दोसर होइ छइ बिचीर-बिसीर कएनाई । बिचिर बिचिर माने होइ छइ अपनी कमरट मे पड़ल रहनाई आ बाबरी के बाँझरोने रहनाइ । ने अपना समयक कदर आनै दोसरक । बेहात मे जे नगहर लोक कहबैत छथि, हुनका ओइठाम मे काजक मुख्य आनइ कमासुत भऽनक । हमर बाप-दादा लोकनि दू-दू पहर बैस कए मालिकक अँगूर चटकथिन । मालिकक छोट बिन नेनाक पैर पीअऽ मे हुनका लोकनि के कतेक घंटा लागि जाइत छलैन । दूहा मालिक हेइ उमाकुले पुनायऽ मे आधा पहर लागि जाइत छलैन । मुने छी जे हमर दादा बहुत बड़िया खवासी करैत छलाह । अपना मालिकक पोती के ओ एहन नेहो कऽ चुनिअवितथि कि कैयो पोती के फूकिइ सऽ सर सँ छड़ि जाए आ फेर जहिना के तहिदा बैस जाए । मालिक ओ एन करथिन कि पागल सँ पागल आदमीक अँखि पर नीन हवार भऽ जैवनि छड़ी

बनावऽ मे इस कोल तक हुनकर यवा रहैव । दुवा हो भाई ! हुनकर तरहकीक सव रस चाटिकऽ मासिकक तन्वा सब गुलाब बंगल रहल होनि, अपन बाल-बच्चा हुनकर शाइते कहियो भरि देह कपड़ा अथवा भरिपेट भोजन कएने हेतैव । लीम पुरखाक हाल तऽ हमहु कहि सकैत छिअऽ । मासिकक पैठक पुन गवैत आ हुनका लोकनिक बिकट-त-विषद मारि के परेय-भाव सँ सुनेत हम अपना दादी के देखल । राति-दिन सेवा करिते रहलइ । पाव-आव-पाव खुदीक लेल हमर नाए कोना रिरिआइत घुमे ते विनरक सात छइ ? आ अपना बचनक थोड़ बहुत हाल हन कहिए हेने छिअऽ । आव लोही कहइ जे हमर तीन पुरखा कीन काज गएला । मासिकक लेल ओला आ मासिकक लेल मरलाइ । शहर मे देखलिये केहन दुर्ती सँ लोक काज करैत अछि, केना एक दोकरक मेहनति आ तमयक हुनका लोकनिके ध्यान रहैत छलैन । आइ, तीन पुस्त पहिने जे आदमी कलकत्ता टाटानगर गेल से ओहो बसि गेल । ओकरा लोकनिक बाल-बच्चा सब पढ़ि लिखि गेलैक अछि हो भाई, नीक-निहुन पहिनेत आपन अछि । सब, कारीगर, मिस्त्री, फोरमैन आदि बन गेलै । आ साठ पुस्त हनमा ओइ राति मे रहैत मऽ गेल, फटीचरी मे कोनो फर्क नहि पड़ल । दादी के मुँह सँ सुनने छी, हमर पुरखा पहिने बनिचीम मे बहिआ-गिरी करैत रहथि । हमरा परदाशक परदाश हैं ओहिठामक एक जनोंदार दहेज मे अनाइक संग कऽ देने रहथिन । तहिवा सँ लऽकऽ ई सातम पुस्त बीच रहल अछि । दुनिया जहान बबलि गेलैत अछि । मासिक लोकनिक दशा बबलि गेलैन अछि । हमरा लोकनिक गुलामी पर काभी असर पड़लैक अछि सुधा अलनी तक मासिक लोकनिक रहन-सहनक ढंग रहलैन कि राति दिन हमरा लोकनि हुनका पाछा नांगरि हिलबैत फिरैत छलकै । काज ओतेक नहि अते कि

सुशामर । हमरा लोकनिक मुँह सँ दिन के पचास-पचास बेर मासिक-मासिक, सरकार सरकार, हुकर-हुकर सुनऽ मे जाति तइ बाबू लोकनि के की रह अवैत छलन्हि । आ माएक तऽ किछु पूछइ नइ, ओ तऽ बात-बात मे मलिकाइम-मलिकाइम, सरकार-सरकार रट लगौने रहए । कलकत्ता, मालदह, विभुनभोग आ बम्बई आजक एक कतरा लेल ओ कतेक धंटा तक मलिकाइमक पैर अतैत रहैत रहै ।

छोटका मासिक रंगल दिलक आदमी रहथि । चालीस पार कए चुकल इलाह । मीठ-दादी हाथ । बाल-गुलाबी आ भोल मटील चेहरा एहन सुन्दर लखैत ते कि कहिय । मासिक केश कारी हुजंवर रहैत, अँठठिया । ठीक फराक मऽ नहि छलैन । शहरक हवा जे खएने छलाह ? बी० ए० तक पाँह कऽ छोड़ि देने ललाह । पहिने किछु दिन सुप्रीत मे मास्टरी करैत इलाह । बाद मे रौन्दी इजारीबगक दिस कोनो राजाक ओहिठाम बनेअरी हाथ लगलैन । जावत तक ओतय रहथि, पोंचो ओगुर धीरे मे । एगहर दू-तीन नास सँ घर बैसल रहथि । मलिकाइम रहथिन नइ । मोन ब्दास रहैन ।

एक दिन माएक संग रेबनी सेहो काजपर गेलै । चीकल पीसथक रहै । माए कहलक—दू हाथ लगा देने तऽ जहदी पीस लेब । मासिक मधुबनी बबथिन, दिनकऽ आम, दूध आ फुलका खाकऽ । रेबनी सेहो बंग गेलै । हू माए-बेटी बीकन पीस चुकल तऽ मासिक गोर पारलखिन-बलचनमाक माए, अरे लोहर बेटी तऽ बड़ि कऽ ताड़ गेल जाइत छी ।

ई कहिक ओ एड़ीतँ शिला तक रेबनी के देखऽ लगलखिन आ नचाकऽ भौंलि घुमा बैलखिन । सामने दोसर घरक ओसारा पर पलंग पड़ल रहै । पद्म, चादरि आ मेहवा, जकरा दूबसन दग-दग ज्वर खोलपर साल-हरिहर

होराक कसीदा छलैक—लोह मे लोह मिरौने दूटा सुग। ओही पर केहुनी रोपने मालिक धैसल रहथि।

आँखि फाँटि-फाँटि कऽ ओ रेवनी के देखलखिन। चिकन पीग सेलापर माए गंग जखन ओ रेवनीक बात लओलखिन तऽ ओ कहलकैन—बरसी छे बाबू जखन, की खाऽ पी कऽ ओ ताड़ हलैक।

एसे कहि कऽ ओ फेर कोनी काय मे लागि गेलैक। ननहर जाति बलाक सोझ मे हमरा घरक माए-बहिन बहुत रम बजैत छैक। ओहू मे तुम्हन्व यदि मालिक आ नोकरीनिक रहलैक तऽ लिहाज आर बेसी बहि जाइत छैक। मुदा मैया, बड़का लोकक चुलचुली तबियत के एतने मे लसीप कऽ। ओ लोकनि बेकार हमरा लोकनिक घरक स्त्रीगणक लम थिया बातक बात करवाक बहाना तकेत रहैत छथि।

नाएक ओहि उत्तर सँ छोटाका मालिकक मोन नहि भरलैन। कनी-काशक बाद कहलखिन—तो आबऽ जागि जरा धुँवचनमा माए, रेवनी एमहर आबि कऽ कनी पंखा हौक देत। ई आजि कऽ मालिक एहन फुफकार छोड़लैन जे बुकऽ केना आबि मे नाँडि। कहिए बुकल छिथ जे हमरा माए के मालिकक नेत पर बड़ा मरोरा रहै। ओ हुनका लोकनि के देवताक अवतार बुकैन। अरबु ओ आँखि सँ रेवनी के इशारा कएल छै जे वा कऽ कनी पंखा हौकि दहू।

पंखा नइ रहै, बियनि रहै जे रेवनीक हाथ मे तऽ देल गेलैक वा ओ आँखि नीचा कएने बियनि चलावऽ लगलैक। बियनि मे नूटक संग पात बाँकल छोपी रहैत छैक। मोल आ चिकन कोपी के भीतर बियनिक काठी पड़ल रहै छैक। छुडी मे लऽ कऽ कनिके डोलएला सँ बियनि अपने उँ चलऽ लगैत छैक। कि ई फिर, फिर फिर, फिर-फिरि बड़ मीठ आवाज

होइ छइ हो माई! अगल मे बैग कऽ केओ पंखा चलएतऽ आ तौ पड़ल-पड़ल हवा खारत रहइ, तऽ तोहर सपन हो माई आँखि नइ लागि जाओ तऽ के कहइ।

रेवनी जखन बंला चलबै छलै तऽ अहूँ सँ मालिक गेरुआ तर मे हाथ देलनि आ अठनी निकाललनि पलंगक। पौआक साथ चपटल रहै, ओही पर अठनी थऽ देखलिन। रेवनीक आँखि मे लोभक दरति नइ रहैक, ओ अठनीक दिस देखथो नइ केसबै। पहिने जहाँ बहिर रहि मालिक के पंखा हौकैत रहलै। मोन मे सोचलक जे दोकान सँ कोनी चीज बहुत मँगावऽ चाहैत छथि। अही सँ चुपचाप रेवनी बियनि चलबैत रहलै।

एमहर मालिक के मोन मे तऽ हो भाइ शैतान हिगुर ककाँ झकमोरैत रैन। ओ सोचैत छल रैताह, छौंड़ी छइकि कॉन्ह। नइ हिलै छइ मे होलै छइ। केहन पाथर छइ। हुनका लोकनिक एहन सोचनाई बेकार नइ रहै। कारण जखन ओ लुथान रहथि तऽ अही गँध मे एक दुअरी मे लुथान छौंड़ी भेटैत रहै। रैतनी अडिग भऽ कऽ मालिक के पंखा हौकैत रहलैन। फेर मालिक अठनीक दिस इशारा करैत कहलखिन छठवैत किपाक नहि छै। रेवनी अठनी दिस देखि फेर पंखा हौकऽ लगलैन। कनी काल दहरि कऽ मालिक सँ ओ पुछलकैन—किछु मँगावऽ के अछि सरकार, दोकान जाइ ?

ई कहैत काल रेवनीक दृष्टि नीचा दिस रहैक। आँखि मे कोनो विकार नइ रहै। एकतऽ अइ अवस्था मे देटी सब अहिना संकोची होइत छइ माई, आ हमरा बहिनक तऽ हाले मे पूछइ। नेने सँ ओ शील-संकोचवाली छलि। आँखि मिला कऽ ककरो सँ बातचीत करैत कहियो ओकरा देखबै नहि कोलियैक। ई सोचि कऽ कि बनेथा, मालिक मुस्वऽ लगलाह। माँस हिलवऽ

भीड़ तानिकड आँखि के नचोतनि। ओ हवा करेत आ रहल छले, हुनक कुविचार सँ अनाहुँ।

अग्न दहिह अग्निर मे मालिक खेलत छलाह। एहन अवसर पर चुपचाप हाडू या नइ-मइ कहैत बीसो के ओ बहो पकड़ने रहथि। ई हुनका लेल एकदम मामूली बात छलैन। छीकड खानेड जकाँ हो भाइ बिरकुल मामूली बात। भनला घर मे माए घरहर हाँसू नै लवननि चीरेत रहे। जमबे करैत छहक बहना आदमीक अँगना बकीटा होइत छैक। बाबू दिस पर होइत छैक, बीच मे खुलता बागहवा अइ खासी बागहवा कें अँगना कहैत छैक। पोखरि जकाँ चौकोर पर आँगन ही देखने हेवहक। सोमना-सोखी घरक बीच अतोक दूरी रहैत छैक। ओइ ओमारा पर केओ बात करैत तऽ एमहर बताकें किछु मुनड मे नइ अएते। अइ ओमारा पर छोनासक बच्चा कंड फाड़ि-फाड़ि कऽ मरि जाएत तऽ ओइ ओमारा पर बेवला माए के किछु बता नहि जलतैक। काज-परोजना मे परोतक हथारी बाभन पीली में बैत कऽ भोजन करैत छथि। पचास-पचास मोन पान गुलाब लेल पसरि देख जाइत छैक। एतेकटा-टा अँगना होइत छैन जमीनदार लोकनि के।

तऽ ही भाई! मालिक के इयाद अवसर सुमझनि आ सट कऽ रेवनीक गद्दा पकड़ि लेत छैन। हाथ मटक कऽ कुरती सँ रेवनी छेग पाछा मऽ गेल, बुझऽ जे केओ ओकरा हाथ पर एक रुप आगि राखि देमे होइक। पंखो हाथ सँ छुटि गेल रहैक। चीखक बदला इधुक हाथ सुनि मालिक एकरा नाटक इकलखिन आ प्रहंग सँ छठि कऽ आँखि बंदलह।

माए से माए—रेवनी बफारि तोरि कऽ भागल तऽ मालिक उबटे जोर सँ तोर पारलखिन—कहाँ सेले मे बलचनमाक माए, तोरा बेटी के तऽ भुत आगि गेलैक अछि। एक हाथ मे हाँसू आ दोसर मे झोलल तजमनिक काँक

बलचनमा

तऽ कऽ माए बहिनवरिआ घर सँ बाहर भेलौ तऽ रेवनी बेतहास दोड़ि ओकरा तँ धिनटि गेलै—मे माए से माए! ओ शोतन सेहो आँगन मे बिछु दूर बहि आपल रहे आ मुखाएल गला सँ खिलखिलाइत रहे।

हमर नाए एहन एक बक भऽ गेल कि आँखि फाड़ि कऽ रेवनी दिस मान देखि रहल छलि। एमहर मालिक अपन चालि बदलतनि। अग्न दहिना हाथ हिला-हिलाकऽ जोर सँ चीकरइ लगला-होयू होयू। बाप रे बाप! धिनी काटि लेलक।

रेवनी के थोड़ि कऽ भाए दोड़ि अएले। अही बीच मालिक अपना बाँहि पर आगे सँ बिजुआ काटि लेलनि, कि चेन्ह निकलि आवे। एकरा बाद ओ माए सँ कहलखिन दु बुन्द मटिया तेल तऽ लाऽ।

अपना ओइथास बिरनी कटना पर मटिया तेल लगबैत छैक। घर मे मटिया तेल रहबे नइ करै। ई बात मालिक के चुकल रहैत। हरदु माए के ओ कहलखिन दोड़, कतौ सँ बुन्द भरि मटिया तेल तऽ बा। कोनहर बहिनवरिआ ओमारा पर बैत कऽ रेवनी लिपकि रहल छल। आँगन केर मुन मऽ सेलै कारण माए मटिया तेल लाबए चलि गेल रहैक। लग मे आवि कऽ मालिक रेवनी सऽ कहलखिन—लगली वहाँ के! मेली कि तोरो? हम तऽ छहिना तोरा छूबि देने छलिओ आ ही करन गिसाही खेलऽ जगले। तोरे एतेकटा अनरि मे तोरा माएक दुरागमन भेल रहैक। आ अहिना पचीती बेर हम ओकर हाथ पकरने हेबे.....

मूठ-हीर मे हुनकि कऽ रेवनी जवाब देलबैन—बाहाँ मूठ बजैत छी! एहेक जहिनऽ ओ छठि ठाड़ि भेल। दुनू हाथ पसरि कऽ आमा सँ मालिक ओकरा घेऽ चाहलखिन। रेवनीक भौ अइहेर दनि गेलैक, चेहरा पर घृणा भरि गेलैक। शिम्भत बान्हि कऽ ओ कहलकैन—ई की मऽ गेल आह

बलचनमा

आहों के मालिक ?

सरकार...सरकार...। मालिक पहन ईपी ईमलानि कि रेवनीक होश गुम भइ गेलें। तामसक आ बलबोरीक ई खिलखिलाहट पंद्रहसासक ओइ अवाध छोड़ोके लेल बिल्कुल नव बन्धु रहैक भैया, प्रकदम नव बन्धु।

हर सँ ओकर करेन काँपइ लगलै, जेना काँपइ लगलै, जेना केराक चिकन पात बपावक हलुक सिहक पानि कइ काँपि लउथै छैक : कनीकासक लेल बेचारिक होश गुम भइ गेलैक। अचेत जकौं भइ गेल। मुदा रहल ठाढ़े।

जमचीके रेवनीक भीतर विनली जकौं क्रोधक लहरि दोड़ि गेलैक। ओकर अंग-अंग बुझा जे कन-कन लटकइक, आँखि मे लाली चढ़ि अइलैक। छाती पड़कइ लगलैक आ दोड़ फइकइ लगलैक।

मालिक अपना हुन मे मस्त रहथि। ओ राच्छस तप कइ मे मे छल जे अइ अइ छोड़ी केँ अछूत नइ छोड़व। बहुत दिन सँ हुनकर आँखि हमरा बहिन पर लागल छलैन। ओ बधर सकेत छलाह। आ देखइच्छा, आइ अइ शोतान केँ अदर भेटल छलैक। एक राधुक मुँह सँ इग बहुत बढ़िया पद सुनने छलहुँ भैया। मुदा आव मोम नई जई। ओ पदक माने इहाइ छलैक जे कामिनी आ कंचनक पौछा ककरो मोन अछन खिचाइ छैक तखन ओकरा ऊपर एक सँ बोलल दालक निशा चढ़ि जाइत छैक। ते भैया ओइ दिन हमरा छोटका मालिक पर सँ ओतलक निशा चढ़ि गेल रहैक। अपन होश-हवास के गड़ा देने रहथि।

अन्त मे अबरदस्ती ओ नीचा मे रेवनी के पटक दिहलिन आ ओकरा बेहमर काबू करक बोधिया करए लगलाह। पन्द्रह वर्षक ओ अधीप आ अवधाय कन्या अपन सम्पूर्ण ताकति बंदोरि कइ ओइ परत दशा मे सेहो बोकबिला करइ लागल। कुकुर आ चिलाइक लड़ाई सँ कहियो देखपहक

भइल। वैह हालत रहैक। हुनर बहिन हारल नइ। ओ मालिकक गट्टी पर एले जोर सँ दौत गइ देखलैक कि ससुर अचेत भइ गेलन्ह आ रेवनी विनलीक फुटी सँ छटि कइ भासि आएल।

एकराबाद जे बरबंर लठलैक ओ हमरा जीवनक रस्ते बदलि देलक।

बात ई भेलैक जे छोटका मालिक एकदम आगि बबूला भइ गेल। मथिआ तेज लइ कइ मार जखन हुनका लग गेलैन्ह तइ ओइ बेचारिक पीठ पर ओ कसिकइ मारि लात मारलखिनह। भाए कानल नहि अर्चकइ रहि गेल। रेवनी केँ जखन ओ ओइ ठाम नहि देखलक तइ कोनो मारि नन्देसा न ओकर माथ चकराए लगलैक। छोटका मालिकक एहि राच्छसी स्वभाव के ओ नहि जमेत हो, से बात ने रहै। ओ सब जमेत रहै। बेचारीक बेहुरा अबर भइ गेलैक। आ ओखिक मोर सुखा गेलैक। आँगन के कुन पानि कइ मालिक पाछा ओकरा पानि भरक रखी सँ हाथ पीठ पलंग मे धाति देलकै। आव ओ फूटि-फूटिक कानइ लागल तइ मालिक गुराँ कइ कहलखिन—बाबू, राखी, अपना बेटी केँ एतइ लइ खड़े कि नइ ? बाबू।

ओ बेचारी की जवाब दितैक। अपन जानक हर सँ लोक कि नइ बात जाइत अछि। मुदा हुनर माए बहुत दिनेर रहए। हमरा दोइ जकौं बात-बात मे ओ दौत निमोड़ नहि जाने। मोनक भगड़ाव नहियो भेला पर अपन इज्जत आ पानीक ओ बहुत पका छल।

ओइ दिन ओइनी दशा मे कोनो तरहें मालिक हमरा माए सँ कोनो तरहक पचन नइ लइ सकला। ओकरअवर बहुत पिटाई पड़ल रहैक। कुहरि-कुहरि कइ पणव फटलक। खेलक-खेल मोर बहैलक, तइयो ओ नीडरि मारनि अइ शर्त पर माथिकक जेल सँ नइ छुटइ चाइलक जे ओ हुनका ओइदाम रेवनी केँ लइ कइ

बदलवना

बदलवना

६२

आवत। ओ पाछी मोर भरल बाँछि सँ कानि-कानि कऽ ओ कहलक—बहुआ वालचन ! भरि मेनाइ लाख गुन नीक मुदा इज्जतिक सोदा केनाइ नीक नहि।

अपन नाएक मुँह सँ एहन बात सुनि कऽ हमर छाती छड़ा गेल। भागबंसे के एहन नाए भेटैत छैक भैया। हमहूँ ई ठानि लेलहुं चाहे उजड़ि जाए पड़ए, चाहे गइल-बामुल भऽ जाए, चाहे फौसी चढ़ी, मुदा कहियो ओइ जालिम के आगौं माथ नइ छुकायब।

हम ओइ दिन घर पर नइ रही, बाहर गेल रही। दूर नइ, लगे दू अढ़ाई कोस। बात इ रहै जे महाराज खॉन बहादुर नहुलवा खॉ कुशतीक बड़ा शोकीत रहथि। नवाबी खानशानी रहथि। बहुत धड़का जमींदारी रहैन। इलाका भरि मे दस दूटा खानदान रहैक जे कइएक सो बरख सँ राज करैत चलि अवैत रहैक। एक खनदान इबाइ इनरा मालिकक रहैन, जा दोसर खान बहादुरक। हमरा मालिकक बहुत जमींदारी बिका गेल रहैन। बसे-पाँच हजार मालाना आमदनीक भोजे बाँचि गेल रहैन। ई छोटखिन जमींदारिओ बेटि कऽ एकदम छोट भऽ गेल रहैक। गोलू आनाक सरकार छोट-छोट पट्टीमे बँटैत, एकनमी, अक्षनी, पैसा, पाँच-कोड़ी दू-कोड़ी आ आधा कोड़ी तक भऽ गेल रहैक। हमरा मालिकक एहन एक पट्टीक मालिकक नाँव पचकोड़ी बाबू रहैन। एक दोसरे पट्टीक कोनो बाबूक नाम तिनकोड़ी बाबू रहैन मुदा नवाबी खानदान। जमींदारी अखन तक ओहिना रहैक। पुरनका रीव दाव आर महपूराबलाक नइ रहि गेल छलैन। तइयो पचास साठि हजार रुपया तसील बला जमींदारीक जेहन रीव होवक चाही से तऽ रहबे करैक।

खान बहादुर के कुशती छड़ बाक बड़ा शोक रहैन। दूटा पहलवान छ सो अपने पोतने छलाह। हुनकर कहब छलैन जे हाथीक बदला पहलवान

बलचनमा

पीसबाक चाही। तबारीक काल तऽ बगी टम-टम सँ चला लेल जा सकैत अछि मुदा अखारा मे जखन दू पैतराबाक दू पट्टा लपना मे लपटैत अछि तखन जे आनन्द देखऽ बला के भेटैत छैक से हाथी पोतऽ बलाके की खाकऽ भेटैतैक।

तऽ हम ओइदिन महपूरा बंगल देखऽ गेल रही। फिरलौतऽ सौम भऽ गेल रहैक। गोंबक बाहरे चुन्नी सँ भेट भेल। ओ हमर नकोटिया संझी रहए। बेह पहिने हमरा टोकलक—के। वालचन !।

पाइनक नाला रहैक। ओइ मे लाठी धोपिकऽ ओकरहि बले हम बाहर टपि अएलौं आ जबाब देलियैक—हँ चुन्नी, अवेर भऽ गेल। महपूरा सँ आवि रहल छी।

खूब कुशती देखने हेबऽ, के जोड़ा छलै ? हम आगौं बहिकऽ कहलियैक मोता, तौतऽ मेबे नहि कएलह। तोरा तऽ ने अपना महीम तऽ छुट्टी भेटैत छह आने नहरानी तँ। महीम फोलेत छह तऽ महरानी बान्हल रहैत छथुन आ महरानी के चखैत छह तऽ महीम बान्हल रहैत छह।

हमरा हँती आवि गेल। जोर सँ भभा कऽ हम हँति पड़लहुँ, मुदा तबाब मे चुन्नी चुप रहल। हम सोचलहुँ—अन्हार छह, चुन्नी मुसकाइत अछि। फेर पुछलियैक—बजैतनइ छह ? भौजी इलत्ती मारलखुन अछि ? चोट लागल छह तऽ चलह हम मालिश कऽ देत छिअह। पटना सँ सील बएलहुँ अछि।

आब हम एक दीगराक लग आवि गेल रही। माँकि कऽ हम देख-लियैक, चुन्नीक मुँह बड़ उदात्त रहैक। पूजल ठोर मे सँ लज्जर दाँत सेहो रसतीक ताबूत देत रहैक। लाठी के बगल मे दवा कऽ दू हाथ सँ हम चुन्नीक कान्ह ककमोरि पुछलियैक—की बात छैक ? एतेक काल सँ तौ पुन कियाक छह ? कोनो नबबात तऽ नइ भेलैया ? तइयो चुन्नी किछु नहि

बलचनमा

बाजल। स्थिर से हथरा हाथ के अपना कान्ह से छीड़वैत कहलक—
किछु महि।

एतेक बाजि चारि डेग त्रामों बड़ि चुन्नी करै लैक गेल। हमर मोन
तऽ पहिने खटक गेल रहए, आव सन्देह पड़ा भऽ गेल जे टील परोस में
कोनो जरूर खराब बात भऽ गेलैक अछि। आव हमरो चुहलवाजी समाह
भऽ गेल वा कोनो खतराक अनदेशा कौट बनिऽ मोन के बेधऽ लागल।
चारिडेग हमहू आगों बड़िकऽ चुन्नीक बागों डाढ़ भय गेलों आ कहलियैक
हमर शांत कहऽ की भेलैया। महीस ने तऽ मोहर करी खेत में चलि गेल
छलैक। मालिकक कोनो झूड़ा बात ने तऽ कहि देखलहु अछि।

एतथी पर चुन्नी चुप रहल। खासी हमर हाथ पकरि ओही ठाम एक-
पेरियाक कात में पीछरीक भीड़ पर धम्म से बैस गेल। हमहू बैस गेलहुं।
मोन हमरो भारी भऽ गेल रहे। कनीकाल हम दूनु चुप रहलहुं, फेर चुन्नी
बाजल, फुस फुसाकती घर नइ जाऽ। क्रियाः—अँखि फाड़ि कऽ आ दम
साधिकऽ हम ओकरा दिस देखऽ लगलियैक। ओ थोड़वहि में मोनबल
सब बात हमरा कहि देखल आ फेर कान्ह पकरि कऽ कहऽ लागल—बालचन,
आइ दिन भरि छोटका मालिकक हरबाह-चरबाह तोरा तकैत फिरलको।
पत्नीसौं आदमी सँ ओ तोरा विषय में पुछललिन कहों गेल बलचनमा!
भैया, कनीकाल तौं अही ठाम बैस, हम दीया फिरि कऽ लवैत छी फेर तोरा
बापना ओइठाम ल जएथो।

हमरा पैरक नीचा धँ मारि हटऽ लागल। अँखिक आगा अन्दार पे
लेलक। हम थोक ननि गेलहुं। हमरा जोहि हालत में छोड़िकऽ चुन्नी दीया
फिरऽ लागल। डेहुन पर कशर राखि हम गुन-गुन ओहिना बैसल रहि
गेलहुं। हमरा मोन में किसिम-किसिम के भाव छटैत छल। एक मोन के

बलचनमा

ई होइत छल पचरिया हौख लऽ कऽ दुपहर राति में जाइ बा छोटका मालिकक
के घेंट काटि आवी। दोसर मोन ई होइत छल जे मालिकक कागजक बोड़
बंडल के छटा लावी जाइ में हजारक तमसुक आ सैक दहावेज राखल
छैक। तेसर बात जे मोन में छटए ओ ई जे माए बहिन के राता-रातो लऽ
कऽ पटना चलि जाई। चारिम बात हथी मोन में छटल जे अहिठाम सँ
इनटे दरिमंगा चलि जाइ एखरे ओतए आए फूल बाबू सँ छोटका मालि-
कक सय करनी कहि दी। अइतरहें किसिम-किसिमक बात हमरा मोन में छटि
रहल छल। एहन विपद्दो में हम कहियो नहि पड़ल छलहुं। भैया, छोटका
मालिकक विषय में ऊँच विचार तँ हमर कहियो ने रहल, हुवा आदमी एहन
राकल होएत, ई तऽ तयनो में नई सोचइ छलकँ। एतेक काल में चुन्नी दीया
फिरिकऽ पंछुआ करऽ लागल। आवाज अवेस छलै—छपर छप्प—छपर-छार-छप्प।

अइ आवाज सँ हमरा किछु होश आएल आ हम सभरि गेलहुं जे चुन्नी
सँ सेहो पूछि ली। एतगर दिमाग किछु काज नइ कऽ रहल छल। मोन
विररोक घर भऽ रहल छल।

हाथ पैर भी कऽ कुहर कऽ कऽ चुन्नी ऊपर पीछरीक भीड़ पर, अतऽ हम
देखल छलहुं आएल। हमर कान्ह झोला कऽ ओ कहलक—पगलपन सँ तऽ
किछु हेतह नइ, ठंढी मान सँ सोचि विचारि कऽ आ दोस मीस सँ राय-
स्वाह लऽ कऽ ठीक करवाक चाही जे एहि राखस के हमरा लोकनि कोना
बनाए करी।

चुन्नीक इ बात हमरा नीक दुहाएल। दोख-महीम, हित-वन्धु तोरा सब
सम भेटलऽ भाई? जतए अपन बुद्धि काज नहि करए ओतए हीस-मीत सँ
राय लेबेक चाही। एक आदमीक बुद्धि तँ दस आदमीक मिलल-सुलल
हिं जाब गुना बढ़िया छैक। हमरा एहि समय में किछु नहि सुनि रहल

बलचनमा

छल। चारु दिस चुप्प-अन्हार बुझाई छल। जोड़-करेज धर-धर कपैत छल। एहन दशा मे चुन्नी हमर सहारा भेल आ हम छति कऽ टाढ़ भेलहुँ। ओ कहलक—तोड़ू घाट पर जो आ हाथ पैर भी आ। हाथ-पैर-मुँह थाला सँ थकान सेहो हटती आ मोन सेहो हलुक भऽ अएतो।

लाठो ओकरा थमा कऽ हम पोखरिक घाट दिह बढलहुँ। नीचा देखल भरि पानि मे पैत कऽ हाथ मुँह धोएलहुँ। खसारि कऽ गला साफ कएलहुँ। रगरि-रगरि कऽ घुट्टी आ पैर धोएलहुँ। ओखि-नाक, कपार, कान, कनपटी, गरदन, आ पाँज पर भोजल हाथ फेरल आ बाहर निकलि अएलहुँ। चुन्नी ताबत तक डाढ़े छल। फेर हम दूनू गोटे आगों गामक छिब बढलहुँ। ओ आगों-आगों आ हम पाछों पाछों।

चुन्नी हमरा सोझ नहि आयल। मालिकक पट्टी सँ फराके-फराक मोसौंई गोक भीठ खेतक आरि पर भऽ सीरी अमातक धरक पछुआर देने ओ हमरा अपना घर लऽ गेलइ।

भाई, तोड़ू तऽ देहाते के रहऽ बला छऽ। जनवे करैत छहक जे देहातक लोक सब सौँझ-सबेरे खा-पी कऽ मुति रहैत छैक। बुढ़ पुरनिया तऽ राति मे बड़ी काल तक खँसैत-खोखैत रहैत छैक वा अन्धारे मे अपन धितलाहा दिनके मोन पारि कऽ बिभोर भए वर्तिवाइत-वतराइत रहैत छैक। दिनक मेहनति सँ नुर-चूर जुआन आ अपेड़ लोकनि बहुत पहिने सुइत रहैत छथि। खेतीक समय नइ रहल तऽ बेकारी मे छुतैत-ओधियाइत दिन धितैत छेन्ह आ राति कऽ जल्दी नहि सुतेत छथि। लोरिक, चिरहा, सल्लेस आ कबीरक भजन गवेर रहैत छथि आ फेर कोनो चोगाई पर पुआरक बीड़ी पर बैल तो हुनका लोकनि के समाकुल मलैत आ चिलम फुकेत देखबहुन। स्त्रीगण सब बेर तक जगेत रहै छथि आ तइके छति जाइ छथि।

चुन्नीक बाप मनियार मंडल नामूली ढंगक गहस्थ रहथि। बचन पहिल समिरक सात बरख तक दाकाक कोनी चटकल मे भजूरी कऽ कऽ काकी बरेवा ओ चुन्नीक माए के पठौने रहथीन। चुन्नीक माए दिनका छोटे समिर तऽ हम धन्नी काकी कहक श्रमवत्त भऽ गेल रही; बड़ा लछमिनिया रहैक। बचन घरबलाक कमाइ सँ धीरे-धीरे ओ तीन बीघा खेत लऽ नेने रहए। आव ई लोकनि छोटका जातिबला मे हैसियत बला वृक्षल जाइत रहथि। बुकले जाइत रहथिसे नहि, हैसियतो रहनि। दू गहीस, एक जोड़ा बरद आ अँगन मे चारु दिस धर रहैत। बमाए-खटाए बला सीन समर्थ जवान रहैक। मज-दूत काडीक दूटा कमाबुत स्त्रीगण रहैक। बेर बखत पर सलाह देबाक लेल बुढ़ रहैक। लछमिनियाँ बुढ़ रहैक। हमरा अइसाम एहन परिवार के भरल-पूरल परिवार कहैत छैक।

बोइ राति कतौ बिरादरी मे भोज रहैक। चुन्नीक दूनू भाई आ बुढ़क अपने बाल-बच्चा के सब लऽ कऽ पात गरमा गेल रहथि। मानसक झंकटि नइ रहला सँ जनी-जाइत सब परोलियाक अँगन मे गप्प लड़ावऽ गेल रहथि दरवाजा पर गहीस आ बरद बान्हल रहैक। बैलार खाली रहैक आ घर सुन्न।

एहन समय मे पैर भारिकऽ हम दूनू बोइ अँगन मे डुकलहुँ। चुन्नी अपना पुवरिया धरक केवार फोलि कऽ कहलक—आराम करह, हम भोजनक इन्जाम करैत छी आ तोरा माएक समाचार सेहो लऽ अयैत छी।

चुन्नी जलि गेल। हम अपन लाठी कोना मे भीतक अवलेमा दऽ टाढ़ कऽ देलिद्यैक। गंजो निकलि कऽ असगनी पर टांगि देलिद्यैक। धोतीक फेंटा कनी दील कऽ लेलहुँ आ ओछाएल सितलपाटी पर अन्हार मे परि रहलहुँ।

बड़ा भूख लागल रहए भाई। मुदा जे किछु भेल रहैक ताहि कारण भूख सुखा कऽ अंतरीक कोनो कोन मे चुसिया गेल छल। हमर दाइ एक बेर

कहिने रहै—बहुत आसती खुशी हो तद्गो भूख रोटा आइत छैक । से ओइ दिन हयर भूख उठि गेल । हम बेर-बेर एसगर ओइ अन्हार मे इएह तोची जे छोटका शालिक सँ डटि कऽ भोर्चा लेबऽ बिना निस्तार नहि । बात लाइ रहैक । इ मे सँ एक, चाहे अपना बहिन के ओइ जालिम सँ हाथ कऽ बी अथवा मुनीयनक पहाड़ खुरी-खुरी माथ पर उठाली । हेमर कोनो राप्ता नहि । मोने-मान पका कऽ लेलहुँ जेह चलि आयब, फाँनी चढ़ि आयब, पाँच सँ सजड़ि आयब मुदा एहि शैतानक आगां तपनी मे साथ नहि झुकाएब । भैया हम उमि कऽ बैस रहलहुँ । डौड़ सोझ कऽ लेलहुँ । ओइ कुप्य अन्हार मे हम अपना मुदरक छौँर साफ-ताफ देखऽ लगलहुँ । ओइ राक्षस के लल-कारैत हम बाजि गरिपहुँ—वेष्टक, हम गरीब छी । तोरा संग अपन धन, कुल-खामदान राब वादाक नाँव, लरोम-पड़ोमक जान-पड़वान, आ जिला-जवार मे मान छो आ हमरा संग किछु नहि अछि । मुदा आखरी दम तक हम तोरा विरुद्ध डटल रहब । अपन सम्पूर्ण ताकत के तोरा विरोध मे लगा देब । माए आ बहिन के बिप दऽ देब किन्तु तो ओकरा लोकनि के अपन खेली बनेबाक सपना कहियो पूर्ण नहि कऽ सकबै.....

हम बैसल नहि रही सकलहुँ । भीतर सँ निकलि आकन मे धूमि फिर करए लगलहुँ । तौ कलकताक चिचिया घर देखने छह भैया ? ओतए जाहि पिजड़ागो शेर रहैत छैक से देखने हेबहक शेर जखन खिसिएल रहैत छैक तऽ कोच सँ ओकर आँखि लाल रहैत छैक आ ओ पिजड़ा मे बन्द रहैत छैक तऽ कि करैत छैक ? इएह कि अपन पिजड़ा मे पाँच डेग एमहर आ पाँच डेग ओमहर, कहुना कोषक आँच के धूमि-फिर कऽ पचबैत अछि । से भैया, हमहुँ अपना कोषक आँच मे चुन्नीक ओइ छोट-छिन आगिन मे फेरा लगा कर पचायए लगलहुँ ।

अरे, तौ चकर लगा रहल छँ—चुन्नीक आवाज आएल तऽ हमरा ध्यान

टूटल । ओकरा एक हाथ मे रोटी रहैक आ दोसर मे कटोरा । हमरा किछु पुछबा सँ पढ़िने ओ बाजल—रेबनी सुति रहल छैक आ चाची (हमर माए) पड़ल अछि । हम ओकरा लोकनि के समझा बुझा देलियैक अछि । तोरा विषय मे निर्दिष्ट कऽ देलियैक अछि । जे पीढ़ी पर बैस जोड़ आ छाले हम डोल कऽ टटका पानि भरि लबैत छी ।

हम नहि बैसलहुँ तऽ चुन्नी हाथ पकड़ि कऽ बैसा देलक । रोटीक नमहर टुकड़ी तोरि कऽ आ तरकारी बला कटोरी मे डुबाकऽ चुन्नी हमरा मुँह मे कौचि देलक । मिरचाइ हम नेने तऽ कनी कम जाइत छी मुदा रामसिमनीक ओइ तरकारी मे बनावऽवाली नइ जानी कतेक मिरचाइ मोड़ि देने रहैक । मिरचाइक अधिक फल स्वाद हमर निशा के तोरि देलक । निशे कहिअऽ भाइ, कारण मोनक बेचैनी, दिमागक परेशानी आ भीतरक बेकली मनुष्य के ओहिना बेइश कऽ दैत छैक जेना दारु आ तारी ।

तऽ तरकारीक कर सँ हमर ध्यान टूटल, हम पुछलियैक—तौ कि खपबह ?

हम तऽ खा कऽ पोखरिक दित गेलहुँ । छोटका महीसक मोन खराब छैक । सरसी मऽ गेलैक अछि । अही वास्ते अतिथा भोज मे नहि जा सकलहुँ जेक दिनके राखल छलैक । तोरा वास्ते रामचरन ककाक घर सँ रोटी लेलियह अछि । हुनका ओहिदाम बुढ़ियाक पथ-पानि लेल सतति आगि जलित रहैत छैक ।

चुन्नी टटका पानि लऽ आएल रहे । रोटी जो के रहैक । रामसिमनीक तरकारी आ जो के रोटी बहुत बढ़िया लागैत छैक, मुदा ओइ राति तऽ हमर जीमे प्रथरा गेल रहए जेना-तेना मिर कऽ भरि इच्छा पानि पीलहुँ आ बाहर जा कऽ लम्बी कऽ अएलहुँ । हम चुन्नी सँ बात करऽ चाहैत रही, मुदा ओकरा कोनो जरूरी काज सँ यमनटोली जएबाक रहै । ओ कहलक जखन आराम करह । मोरे हमरा लोकनि छडब आ तखन गप्प होयत ।

हम बहुत कालतक गुनधुन मे पड़ल रहलहुँ । किसिम-किसिमक बात सोचैत रहलहुँ आ ओहि सोच किस्किर मे पता नइ कखन नीन आबिगेल ।